अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र

सर्वोदय जगत

वर्ष : 44, अंक : 8, 1-15 दिसंबर 2020

सर्व सेवा संघ का 88 वां अधिवेशन सेवाग्राम, वर्धा (महाराष्ट्र) में 28-29 नवम्बर 2020 को सम्पन्न हुआ।

यह चित्र सेवाग्राम आश्रम परिसर में स्थित बापू कुटी का है, जो हमारी राष्ट्रीय धरोहर है।

सर्व सेवा संघ
(अखिल भारत सर्वोदय मंडल)
द्वारा प्रकाशित

अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र
सर्वोदय जगत
सत्य, अहिंसा एवं सर्वोदय-सम्पूर्ण क्रांति का संदेश वाहक

वर्ष : 44, अंक : 08, 01-15 दिसंबर 2020

अध्यक्ष
चंदन पाल

संपादक
बिमल कुमार
सहसंपादक
प्रेम प्रकाश
09453219994

संपादक मंडल
डॉ. रामजी सिंह **अरविन्द अंजुम**
प्रो. सोमनाथ रोडे **अशोक मोती**

संपादकीय कार्यालय
सर्व सेवा संघ
राजघाट, वाराणसी-221001 (उ.प्र.)
फोन : 0542-2440-385/223
ईमेल : sarvodayajagat@gmail.com
Website : sssprakashan.com

शुल्क

एक प्रति	:	05 रुपये
वार्षिक	:	100 रुपये
आजीवन	:	1000 रुपये

खाता संख्या : 383502010004310
IFSC Code : UBIN0538353
Union Bank of India
Rajghat, Varanasi

इस अंक में...

1. संपादकीय... 2
2. सर्व सेवा संघ का 88वां अधिवेशन... 3
3. सर्व सेवा संघ के नवनिर्वाचित... 5
4. शुभकामना संदेश... 5
5. बिहार का चुनाव... 8
6. श्रद्धांजलि... 9
7. अर्णब प्रकरण, कुणाल कामरा के... 10
8. ग्राउंड रिपोर्ट... 12
9. तीन कृषि कानूनों के खिलाफ... 14
10. नोटबंदी के बाद शिशु मृत्यु दर... 15
11. सोने का अंडा देने वाली एक और... 16
12. ओबामा की किताब से भी मुद्दा आखिर... 17
13. लोक-विमर्श... 18
14. गतिविधियां एवं समाचार... 19
15. कविताएं... 20

संपादकीय

सर्व सेवा संघ के समक्ष चुनौतियां

गांधी-150 के बाद सर्व सेवा संघ इतिहास के नये दौर से गुजर रहा है। भारत में और विश्व में भी, अहिंसक क्रांति का एक मात्र वाहक सर्व सेवा संघ है। इस कारण इसकी जिम्मेदारियां भी सबसे ज्यादा हैं।

जब शोषण व अत्याचार बढ़ता है और अहिंसक क्रांति को बढ़ाने वाला आंदोलन कमजोर होता है तो कार्यकर्ताओं के उत्साह में भी कमी आती है। थोड़ा-बहुत अविश्वास व दोषारोपण भी देखने को मिलता है। ऐसे में सबसे पहली जरूरत है कि सर्वोदय जमात के लोगों में, गांधीजनों के बीच प्रेम, सौहार्द एवं परस्पर विश्वास को मजबूती से स्थापित किया जाये। यदि हम आपस में प्रेम व सौहार्द कायम नहीं कर पायेंगे तो समाज में कैसे करेंगे?

इसके लिए दो बातें जरूरी हैं। एक, बुनियादी विचारों पर सर्व-सहमति। दूसरे, कार्यकर्ताओं की कार्यक्षेत्र में स्वायत्तता। सारे कार्यकर्ता एक ही तरह का कार्य नहीं कर सकते। अपनी अभिरुचि के अनुसार कार्य चुनें, जो मूल ध्येय की पूर्ति की ओर ले जाने वाली एक शक्ति के रूप में समाज में परिवर्तन को गति दे। कार्यकर्ताओं का नियमित शिविर भी हो, जहां ज्ञान, कर्मकौशल एवं लोक संवाद की विधा तीनों क्षेत्रों में कार्यकर्ता पारंगत हो सकें।

अपने विशिष्ट गुणों के आधार पर क्षेत्र में काम करने वाले कार्यकर्ता को बल तभी मिलेगा, जब वह एक व्यापक राष्ट्रीय आंदोलन से भी जुड़ा हो। राष्ट्रीय आंदोलन के लिए मुद्दों का चयन तथा एक संकल्प पत्र को गहन चिन्तन व मंथन के बाद तैयार किया जाना चाहिए। और, अगले कुछ वर्षों तक उन्हें राष्ट्रीय आंदोलन की मूल धुरी बनाकर बढ़ना चाहिए। प्राकृतिक स्रोतों जैसे जल-जंगल, जमीन, खनिज आदि से उन समुदायों को बेदखल किया जाना, जो परंपरागत रूप से उनसे जुड़े थे, एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। क्योंकि इन्हें बेदखल कर ही भारत के प्राकृतिक संसाधनों पर पूंजीवादी कारपोरेशनों का नियंत्रण बढ़ाया जा रहा है। भारत की संप्रभुता भी कमजोर हो रही है। खेती, छोटे उद्योग एवं छोटे कारोबारी भी ह्रासोन्मुख हैं। परंपरागत, स्वायत्त एवं स्वदेशी पद्धतियां योजनापूर्वक खत्म की जा रही हैं। ये धर्म विरोधी, जन विरोधी तथा पर्यावरण विरोधी हैं। इन सबके बीच समुदाय व सामुदायिक जीवन नष्ट होते जा रहे हैं।

लेकिन श्रमविरोधी, जनविरोधी व पर्यावरण विरोधी नीतियों का विरोध न हो, इसलिए जनता में निरंतर फूट फैलाने का कार्य किया जा रहा है। जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा, क्षेत्रीयता आदि जो भी इकाइयां हैं, उन्हें भेदकारी षड्यंत्र के तहत इस्तेमाल किया जा रहा है। जो लोग आर्थिक नीतियों के माध्यम से भारत की संप्रभुता को कमजोर कर रहे हैं, वही लोग राष्ट्रीय एकता खंडित कर, दूसरे तरीके से भी भारत की संप्रभुता को कमजोर कर रहे हैं। नफरत, युद्धोन्माद एवं संसाधनों को पूंजीवादी कारपोरेट जगत को सौंपने से राष्ट्रवाद मजबूत नहीं होता।

राष्ट्रीय आंदोलनों के माध्यम से सत्याग्रह के नये आयामों का भी विकास करना होगा तथा सत्याग्रहियों की टोली के निर्माण का कार्य भी आगे बढ़ाना होगा। सत्याग्रही ही लोकशक्ति निर्माण की अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ता होंगे।

सर्व सेवा संघ के सामने एक अन्य चुनौती रचनात्मक कार्यक्रमों के तेज को पुनः प्रतिष्ठित करने की होगी। देश भर में सघन क्षेत्र का निर्माण करें। इन सघन क्षेत्रों में रचनात्मक कार्यक्रमों की रूपरेखा बनायें। रचनात्मक कार्यक्रम स्वावलंबी कैसे होंगे, इस पर विचार करें। लेकिन उनकी दिशा स्पष्ट हो—लोक-स्वराज्य/ग्राम स्वराज्य। इस हेतु तीन प्रकार की वैकल्पिक रचना पर जोर दें। एक बहुराष्ट्रीय निगमों के उत्पादों का विकल्प; दूसरे केन्द्रीय सत्ता के दखल से मुक्त करने वाला तथा तीसरे सामुदायिकता को प्रकट करने वाला। वैकल्पिक रचना वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था के सहअस्तित्व पर नहीं टिके। एक और बार, गांधीजी ने जिन रचनात्मक प्रवृत्तियों को शुरू किया था, उन संस्थाओं को सर्व सेवा संघ के साथ जोड़ने का प्रयास पूरी ईमानदारी से किया जाये। दूसरे आज की चुनौतियों को देखते हुए नयी प्रवृत्तियों को एक अहिंसक महासंघ में जोड़ने की शुरुआत करें। गांधी विचार प्रेरित संस्थाओं के बीच प्रभावी संवाद व तालमेल भी विकसित करें।

एक अन्य बात। आश्रमों को अहिंसक सामूहिक जीवन की साधना के केन्द्र के रूप में विकसित करें। आश्रम सत्याग्रहियों व उनके परिवार के लिए एक बैरक के समान कार्य करें। आश्रम वैकल्पिक रचनात्मक कार्यक्रम हेतु नये प्रयोगों व नये अविष्कारों की प्रयोगस्थली भी बनें। एक समग्र विकल्प प्रस्तुत करने की चुनौती सर्व सेवा संघ के समक्ष है। **–बिमल कुमार**

सर्व सेवा संघ का 88वां अधिवेशन सेवाग्राम में सम्पन्न

राजगोपाल पी. वी. ने किया उद्घाटन

अधिवेशन का पहला दिन

सेवाग्राम मेडिकल कॉलेज के ऑडिटोरियम में 28 नवंबर 2020 को अपराह्न सर्व सेवा संघ का दो दिवसीय 88वां अधिवेशन शुरू हुआ। अधिवेशन का उद्घाटन एकता परिषद के संस्थापक राजगोपाल पी. वी. ने किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सर्व सेवा संघ के कार्यकारी अध्यक्ष चंदन पाल ने की, जबकि विशेष अतिथि के रूप में जलपुरुष राजेन्द्र सिंह, सर्व सेवा संघ के पूर्व अध्यक्ष अमरनाथ भाई, डॉ. सुगन बरंठ, सेवाग्राम आश्रम प्रतिष्ठान के अध्यक्ष टीआरएन प्रभु, सर्वोदय समाज के संयोजक शेख हुसैन एवं महाराष्ट्र प्रदेश सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष डॉ. शिवचरण सिंह ठाकुर मौजूद रहे।

अपने उद्घाटन भाषण में राजगोपाल पी. वी. ने कहा कि समाज में दो तरह के इंसान होते हैं - लेने वाले और देने वाले। जिस समाज में सिर्फ लेने और लेने वालों की संख्या बढ़ जाती है, उसे हिंसा और असमानता से कोई उबार नहीं सकता। आक्रामकता और विस्तारवादी दुनिया में महात्मा गांधी का जन्म एक चमत्कार ही है। हिंसा और विषमता से भरी दुनिया में प्रेम, करुणा, न्याय, सत्य, अहिंसा की बात करना साहस की मांग करता है। आज पूरी दुनिया में गांधी विनोबा की स्वीकृति बढ़ी है। गरीबी हटाओ की बात हो या असमानता की, आतंकवाद की अथवा पर्यावरण संरक्षण की, महात्मा गांधी के कोटेशन के बिना पूरी नहीं होती। राजगोपाल ने गांधीजनों का आवाहन करते हुए कहा कि हमें अपनी फिलॉसफी को गहराई से समझने और नई पीढ़ी का निर्माण करने की जरूरत है।

जल पुरुष राजेन्द्र सिंह ने कहा कि पानी का हमारा पूरा काम सर्वोदय की शिक्षा की ही देन है। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी के सभी कार्यों के पीछे प्रेम की ताकत है। प्रेम के बिना अहिंसा नहीं सधती। सर्वोदय तोड़ना नहीं, जोड़ना सिखाता है। हम आनंद के साथ सच्चे मन से प्रयास करेंगे तो परिणाम अवश्य आयेंगे।

सर्व सेवा संघ के कार्यकारी अध्यक्ष चंदन पाल ने यह विश्वास व्यक्त किया कि तमाम अवांछित और अनैतिक हमलों के बावजूद हम गांधी मूल्यों से नहीं डिगेंगे। सेवाग्राम की प्रेरणा और सर्वोदय की विरासत का बल हमें शांति और प्रेरणा देते रहेंगे।

इसके पहले अधिवेशन के प्रारंभ में गांधी-विनोबा एवं जयप्रकाश को सूतांजलि अर्पित करने के बाद दिवंगत साथियों को श्रद्धांजलि दी गयी। अतिथियों का स्वागत महाराष्ट्र सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष डॉ. शिवचरण सिंह ठाकुर ने किया।

अधिवेशन में सर्व सेवा संघ के पूर्व अध्यक्ष एवं वरिष्ठतम सर्वोदयी डॉ. गोपीनाथन नायर, प्रसिद्ध सर्वोदय नेता डॉ. एसएन सुब्बाराव, राधाबहन भट्ट और एमएम गडकरी आदि के शुभकामना संदेशों का वाचन किया गया। अधिवेशन की पिछली कार्यवाही की रिपोर्ट का वाचन अरविन्द

अंजुम ने किया। संघ के प्रबंधक ट्रस्टी अशोक कुमार शरण ने ऑडिट रिपोर्ट रखी, जिसकी सर्वसम्मति से पुष्टि की गयी। अधिवेशन के उद्घाटन सत्र का संचालन रमेश दाने ने किया।

अधिवेशन का दूसरा दिन

आज गांधी संस्थाओं और आम जनता के बीच संवाद का अभाव बना हुआ है। आजादी के 7 दशक बाद भी गांधी के सपनों का भारत तैयार नहीं हो पाया है। ऐसे में सर्व सेवा संघ और सेवाग्राम आश्रम को मिलकर नये सिरे से गांधीवादी विचारों की स्थापना का प्रयास करना चाहिए। गांधी विचारों की स्थापना के लिए राज्य सरकार हरसंभव सहयोग करेगी। देश में गांधीवादी विचारों से नई आजादी का वातावरण तैयार करने के लिए सर्व सेवा संघ संगठन और सेवाग्राम आश्रम को नये सिरे से अभियान चलाना चाहिए। ऐसे अभियानों को राज्य सरकार से भरपूर समर्थन और सहायता प्रदान की जायेगी। यह बात वर्धा के पालक मंत्री सुनील केदार ने अधिवेशन के दूसरे दिन समापन के अवसर पर कही।

सेवाग्राम के कस्तूरबा हेल्थ सोसायटी सभागृह में आयोजित अधिवेशन के समापन समारोह में प्रमुख रूप से अ. भा. सर्व सेवा संघ के नवनिर्वाचित अध्यक्ष चंदन पाल, प्रबंधक ट्रस्टी अशोक शरण, महाराष्ट्र प्रदेश सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष शिवचरण ठाकुर, शेख हुसैन तथा सेवाग्राम आश्रम प्रतिष्ठान के अध्यक्ष टीआरएन प्रभु उपस्थित थे। आरंभ में जय जगत गीत प्रस्तुत किया गया। इसके बाद अविनाश काकड़े ने अतिथियों का परिचय कराया।

अपने संबोधन में पालक मंत्री सुनील केदार ने कहा कि देश में अधिकारी वर्ग लगातार आम आदमी की अनदेखी कर राजशाही का अहसास करा रहा है। आंकड़ों में देखें तो बीपीएल सूची लगातार बढ़ रही है। ऐसे में आम आदमी को सम्मान दिलाने की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी सर्व सेवा संघ और सेवाग्राम आश्रम की बन जाती है, ताकि देश में स्वतंत्रता के भावों का अहसास सामान्य नागरिक को हो। गांधीजी की विचारधारा में आम आदमी कल्याण का केन्द्र रहा है। किसी भी व्यक्ति अथवा संगठन

कोई नहीं निकला कोरोना पॉजिटिव

महाराष्ट्र उच्च न्यायालय की नागपुर बेंच के निर्देशानुसार 50 प्रतिनिधियों को अधिवेशन के लिए सभागार में प्रवेश की अनुमति दी गयी थी। साथ ही कोरोना संबंधी सरकार द्वारा जारी की गयी गाइडलाइन का अक्षरशः पालन करने की हिदायत भी दी गयी थी। उस आलोक में सभी प्रतिनिधियों का आईटीपीसीआर टेस्ट किया गया। यह एक सुखद एवं आश्चर्यजनक तथ्य है कि तमाम प्रतिनिधियों में से एक का भी टेस्ट परिणाम पॉजिटिव नहीं आया। यह स्वभावतः गांधी की जीवनशैली के अनुपालन का परिणाम है। इतना ही नहीं, 200 से भी अधिक लोकसेवकों व सर्वोदय मित्रों में से किसी को भी सामान्य जांच के पश्चात् कोई लक्षण नहीं पाया गया।

की खामियों को उजागर करना बेहद आसान होता है, लेकिन समाधान प्रस्तुत करना बेहद कठिन होता है।

कार्यक्रम में नई तालीम समिति के अध्यक्ष डॉ. सुगन बरंठ के हाथों शाल और श्रीफल देकर पालक मंत्री सुनील केदार का सत्कार किया गया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष चंदन पाल ने पालक मंत्री केदार को सर्व सेवा संघ की 2021 की डायरी प्रदान की। सेवाग्राम आश्रम के अध्यक्ष टीआरएन प्रभु ने अपने संबोधन में पालक मंत्री के आवाहन को स्वीकार कर जल्द ही गांधी विचारों की स्थापना के अभियान को आरंभ करने की घोषणा की। इतना ही नहीं, आश्रम की गतिविधियों को आम आदमी से जोड़ने का भी संकल्प दोहराया।

सर्व सेवा संघ के नवनिर्वाचित अध्यक्ष चंदन पाल ने कहा कि इस साल देश के संविधान की स्थापना को 70 साल पूर्ण हो रहे हैं। ऐसे में देश भर में संविधान के मूल सार को स्थापित करने के लिए अभियान चलाया जायेगा। इतना ही नहीं, देश भर में गांधी विचारों के प्रसार के साथ महिला उत्पीड़न, किसान और युवाओं की समस्या को लेकर भी अहिंसक प्रतिरोध आरंभ किया जायेगा।

कार्यक्रम का संचालन शिवचरण ठाकुर ने किया। अधिवेशन के इस सत्र में लता राजपूत (बुलढाणा), मधुकर सिरसाट (धुलिया), पत्रकार रमेश दाने (धुलिया), अशोक शरण, पूर्व अध्यक्ष जयवंत मठकर (पुणे), डॉ. विश्वजीत (ओडिशा), आशा बोथरा (राजस्थान), जोहरीमल वर्मा (नागौर), हजारी मल वर्मा (नागौर), विमल भाई (सोनभद्र), नई दिल्ली के गांधी स्मारक निधि समिति के सचिव संजय सिंह, देवराज त्यागी (चंडीगढ़), धर्मवीर शर्मा (हरियाणा), शुभा रागिनी प्रेम (वनवासी सेवा आश्रम, सोनभद्र), अरविन्द अंजुम (झारखंड), विनोद रंजन (बिहार) समेत अन्य लोग भी उपस्थित थे।

महिलाओं की समस्या को लेकर आशा बोथरा ने कहा कि देश में नवजात बालिका से लेकर वृद्धा तक सुरक्षित नहीं रह गयी है। देश की आधी आबादी पर अस्तित्व के संकट के बीच किसी भी सभ्य देश को विकास की राह नहीं मिल सकती है। राष्ट्रवाद के नाम पर फैल रहे उन्माद में महिला की आवाज पूरी तरह से गुम हो रही है। वहीं युवा पीढ़ी में धार्मिक उन्माद का वातावरण तैयार किया जा रहा है। इस परिस्थिति में बदलाव के लिए सशक्त जन आंदोलन को तैयार करने की आवश्यकता है। सत्र में किसानों और युवाओं में निराशा और आत्महत्या को लेकर अविनाश काकड़े ने अपने विचार व्यक्त किये। **- अविनाश काकड़े**

सर्व सेवा संघ के 88वें अधिवेशन का प्रस्ताव

किसानों पर दमन के खिलाफ हैं हम

किसानों के साथ एकजुटता का संकल्प

किसान विरोधी तीन कृषि कानूनों के खिलाफ चल रहे आंदोलन को सर्व सेवा संघ अपना पूर्ण समर्थन देते हुए एकजुटता प्रकट करता है। इन कानूनों के विरुद्ध प्रदर्शन के लिए दिल्ली आने वाले किसानों को बलपूर्वक रोका जा रहा है। सड़कों को खोद दिया गया है, उस पर बोल्डर रखे गये हैं और जगह-जगह पुलिस के बैरिकेड बनाये गये हैं। फिर भी किसानों का हौसला कायम है और वे दिल्ली कूच को अडिग हैं। अधिवेशन किसानों के शांतिमय संघर्ष के जज्बे का अभिनंदन करता है।

केन्द्र सरकार ने लगभग 2 महीने पहले एपीएमसी एक्ट को दरकिनार कर कृषि उत्पादों को खुले बाजार व कॉरपोरेट के हवाले कर दिया है। अनिवार्य वस्तु अधिनियम के द्वारा वह खरीद पर नियंत्रण समाप्त करना चाहती है ताकि कोई कितनी भी खरीद कर सके। यह कानून जमाखोरी के द्वारा कंपनियों या व्यक्ति को भूमि-हदबंदी को बेअसर करने का मौका देगा और जमीन अंततः कॉरपोरेट के हाथ में चली जायेगी।

अतः सर्व सेवा संघ केन्द्र सरकार से अपील करता है कि वह टकराव और दमन का रास्ता छोड़कर संवाद व समाधान का रास्ता अपनाये, ताकि कृषि क्षेत्र की स्वायत्तता बरकरार रहे।

संगठन की एकजुटता हमारी प्राथमिकता : चंदन पाल

सर्व सेवा संघ के नवनिर्वाचित अध्यक्ष चंदन पाल ने देश भर में संगठन को मजबूत बनाने को अपनी प्राथमिकता बताया। पिछले कुछ समय से देश भर में संगठन में एकजुटता का अभाव दिखायी दे रहा है। ऐसे में नये सिरे से प्रयास करने की आवश्यकता है। इसके साथ ही जल्द ही देश भर में दौरा कर सभी जिलों के स्तर पर कार्यकारिणी की गठन प्रक्रिया को आरंभ करेंगे। इसके साथ ही केन्द्र सरकार के प्रस्तावित कृषि विधेयकों के विरोध में आंदोलन करने वाले किसानों से भी मुलाकात की जायेगी। देश में सांप्रदायिकता के खिलाफ और जल, जंगल, जमीन के शोषण पर भी गांधीवादी संस्थाओं को एकजुट होने की आवश्यकता है। इस दिशा में भी गंभीरता से प्रयास किया जायेगा।

देश में बदलाव के लिए गांधी-विचार ही एकमात्र विकल्प : अरविन्द अंजुम

सर्व सेवा संघ के दो दिवसीय अधिवेशन के दूसरे दिन के पहले सत्र में अरविन्द अंजुम ने वर्तमान देश और परिस्थिति पर अपने विचार व्यक्त किये। इस सत्र में प्रमुख रूप से सर्व सेवा संघ के पूर्व अध्यक्ष अमरनाथ भाई, सेवाग्राम आश्रम के पूर्व अध्यक्ष जयवंत मठकर, पत्रकार रमेश दाने (धुलिया), अशोक शरण, डॉ. विश्वजीत (ओडिशा), आशा बोथरा (राजस्थान), नई दिल्ली के गांधी स्मारक निधि समिति के सचिव संजय सिंह, विनोद रंजन (बिहार), शेख हुसैन और अविनाश काकड़े ने सहभाग किया।

अपने संबोधन में अरविन्द अंजुम ने कहा कि देश में दो वर्गों का राज चल रहा है। इन वर्गों का शोषक और शोषित के रूप में वर्गीकरण हुआ है। शोषक वर्ग बेहद अत्याचारी रूप में पालतू जानवरों की भांति शोषण तंत्र को चला रहा है। शोषित वर्ग में महिला, मजदूर, कर्मचारी और युवा वर्ग के साथ ही किसानों का समावेश है। वहीं दूसरी ओर शोषक वर्ग में पूंजीपति, औद्योगिक घराने, नौकरशाह और निजी निवेशक कंपनियां शामिल हैं। इस व्यवस्था से देश लगातार विघटन की ओर बढ़ रहा है। इन दोनों वर्गीकरण में आम आदमी के प्रतिरोध की आवाज को पूरी तरह से कुचल दिया गया है। इस व्यवस्था को बदलने के लिए गांधीवादी विचारों की स्थापना ही एकमात्र उपाय है। देश भर के शोषित वर्ग को एकजुट कर प्रयास आरंभ करना होगा।

सर्व सेवा संघ के नव निर्वाचित अध्यक्ष चंदन पाल का उद्‌बोधन

साथियों जिस संस्था के अध्यक्ष धीरेंद्र मजूमदार, नवकृष्ण चौधरी, नारायण देसाई तथा गंगा प्रसाद अग्रवाल जैसी महान विभूतियां रही हैं, उस संस्था का पहले तो आपने मुझे कार्यकारी अध्यक्ष बनाया और अब इसे और विस्तार देते हुए अध्यक्ष की जिम्मेवारी सौंपी है। मैं आप लोगों के विश्वास पर हैरान हूं। यह जवाबदेही एक ऐसे वक्त पर मुझे सौंपी गई है, जब संगठन के अंदर और बाहर कठिन चुनौतियां हैं। हम जानते हैं कि संगठन में लोग लेने के लिए नहीं, देने के लिए आते हैं, योगदान करने के लिए आते हैं, अर्जन करने के लिए नहीं। एक बार प्रख्यात गांधीवादी सुब्बाराव जी कोकराझार आए थे और उन्होंने मुझे कहा कि आप एक साधना में रत हैं, लेकिन मैं तो एक संसारी व्यक्ति हूं। मेरे लिए यह सुखद है कि मेरी पत्नी अनुलेखा और पुत्र सौरव का सहयोग मुझे मिलता रहा है। मैं आज उनका भी शुक्रगुजार हूं।

सर्व सेवा संघ का लक्ष्य बहुत ही महान है। हमारी क्षमता और सामर्थ्य सीमित है, फिर भी लक्ष्य के अनुरूप प्रयास करना हम सभी का सामूहिक दायित्व है। संगठन के अंदर जो अस्वास्थ्यकर वातावरण बना है, उसे दूर करना मेरा प्राथमिक कर्तव्य बनता है। आपने मुझे जिम्मेवारी सौंपी है, तो आप सहयोग करेंगे ही। मै इसके लिए पूरी चेष्टा करूंगा। सर्व सेवा संघ के संविधान की भी समीक्षा करने की जरूरत है। इसे अधिक से अधिक लोकतांत्रिक और सामूहिक स्वरूप देना आवश्यक है।

आज देश के सामने सांप्रदायिकता, जातिवाद, महिला उत्पीड़न एवं पर्यावरण का संकट गहरा रहा है। भारत के संविधान को बने हुए 70 वर्ष पूरे होने को हैं और आज संविधान की मूल प्रस्थापनाओं और बुनियादी संरचनाओं को नष्ट भ्रष्ट करने की कोशिशें हो रही हैं। हमें संविधान की मर्यादा को बनाये रखने के लिए हर संभव कोशिश करनी है। लोक शिक्षण और लोक का ध्यान ही हमें इन समस्याओं से मुक्ति की ओर अग्रसर कर सकता है। लोकतांत्रिक प्रक्रिया और सामूहिक नेतृत्व के द्वारा हम इसे प्राप्त कर सकते हैं। हमें सत्ता नहीं, सत्य के संधान में लग जाना है। बापू, विनोबा, कस्तूरबा और जयप्रकाश नारायण हमारे मार्गदर्शक हैं, यह हमारी प्रेरणा है। उन्हीं के बलबूते हम प्रेम, करुणा, सत्य और न्याय के पथ पर आगे बढ़कर सफल होंगे। आप सभी का मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूं। ❑

नवनिर्वाचित अध्यक्ष को मिले शुभकामना संदेश

राधा भट्ट का संदेश

आदरणीय अध्यक्ष जी, कार्यसमिति के समस्त सदस्य तथा अन्य सभी सर्वोदय साथी।

सर्व सेवा संघ के इस अधिवेशन को मैं एक ऐतिहासिक घटना मानती हूं। यह केवल सर्व सेवा संघ के लिए ही नहीं, वरन् पूरे सर्वोदय विचार के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है।

आज आप बड़ी संख्या में मिलकर सर्व सेवा संघ के लोकतांत्रिक ही नहीं सर्वोदयी-साम्ययोगी स्वरूप में लाने के लिए कृतसंकल्प होकर बैठे हैं। आप इस क्षण के भागीदार बन रहे हैं, यह आपका सौभाग्य है। मैं तो तहेदिल से इसमें जुड़ना चाहती थी, पर मेरी मजबूरी है कि मैं आपके बीच नहीं पहुंच पायी हूं। आप सब मुझे क्षमा करेंगे।

बीच सागर में तूफान जहाज को डुबाने लगे, तब उसमें बैठे लोग मेरा-तेरा, ऊंच-नीच और छोटा-बड़ा भूलकर सब एकजुट होकर जहाज को डूबने से बचाने के उपक्रम में लग जाते हैं। वही भावना तथा प्रेरणा अभी हम सब में होनी है। सबकी पुरानी भूलों व कमियों को भूल जाना है। साथियों के गुण देखें और स्नेहपूर्वक साथ ले लें। सर्व सेवा संघ ने टूटकर दो समूह बनकर अपनी शक्ति का ह्रास होने का अनुभव पूर्व में एक बार किया है। अब वह अनुभव हमारे अस्तित्व को ही कमजोर कर देगा। अतः हमें एक रहना है। एक रहना है पर सत्य-अहिंसा व न्याय के साथ प्रेम जोड़कर ही हमारी शक्ति रहेगी।

मैं अधिवेशन में आप सबकी सफलता, सौहार्द्रपूर्ण वातावरण तथा सन्मति के लिए अनेक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूं।

× × ×

संजय सिंह का संदेश

आप सर्व सेवा संघ अधिवेशन में अध्यक्ष के रूप में हैं, यह अत्यंत संतोष और महत्वपूर्ण हैं। आज की इस समयावधि में गांधी- विनोबा विचार की दशा और दिशा का भविष्य में जब भी विश्लेषण होगा, आपकी भुमिका को बारीकी और सघनता से देखा और समझा जरूर जाएगा। हम सब युवा बहुत बारीकी और बहुत आशा के साथ आप को फॉलो कर रहे हैं। हम सब आने वाले पीढ़ी से हमेशा आप सब की भूमिका की चर्चा करेंगे। भाईजी के बाद आप गांधी विनोबा विचार के एक महत्वूर्ण दिशा निर्धारक की भूमिका में हैं। इस संकट के बाद सर्व सेवा संघ नए उत्साह, नई ऊर्जा के साथ समाज और युवाओं को दिशा देगा, इस शुभेच्छा के साथ, हमारा प्रणाम और विचार निवेदित है।

गोपीनाथ नायर का संदेश

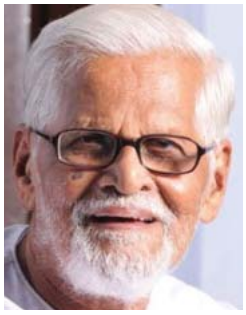

Dear Chandan Pal,

I am really very happy to get a letter from you after a long time, to be remembered after so many years is a pleasant surprise.

There is nothing more pleasing, than to know that you have been elected the president of Sarva Seva Sangh, I was wondering why you have not be ellected earlier. You are one of the gewels. May god bless you to serve a number of years here. I have high hopes that you will make things fine and frutifull. Good wishes.

I am now 99+. It means near gone. I will be hitting a centuray in my service to Truth & Ahimsa.

With best wishes.

× × ×

सत्यपाल जी का संदेश

Dear Shri Chandan Pal ji

Hearty congratulations on your unanimous election as President of Sarv Seva Sangh.

your devotion, sincere and steadfast services to Sarvoday movement has brought this award to you. May God bless you with broad shoulders to discharge this responsibility. My cooperation will be always with you.

× × ×

इसके अलावा भी देश भर से अनेकों लोगों ने चंदन पाल को अपना शुभकामना संदेश भेजा है, जिसमें मुख्य रूप से शामिल हैं - अशोक बंग, निरंजना मारू, सर्वोदय मंडल चंडीगढ़, एकनाथ डगवार, सचिव, भूदान यज्ञ मंडल, महाराष्ट्र, जयंत दिवाण, पवित्थारन, केरला, शंकर कुमार सान्याल, अध्यक्ष हरिजन सेवक संघ, पश्चिम बंगाल सर्वोदय मंडल, चन्द्रशेखर प्राण, एम. पिथाम्बरन मास्टर, त्रिशूर-केरला, आर. सी. राही, नई दिल्ली, राजेन्द्र खिमानी आदि। ❑

चंदन पाल सर्व सेवा संघ के निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित

सर्व सेवा संघ के सेवाग्राम में आयोजित 88वें अधिवेशन में चंदन पाल को सर्व सेवा संघ का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। उल्लेखनीय है कि निर्विरोध सम्पन्न हुए इस निर्वाचन के लिए किसी और का नामांकन पत्र आया ही नहीं। अध्यक्ष के चुनाव के बाद हुई बैठक में सर्व सेवा संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के सदस्यों और मंत्रियों के नामों की घोषणा भी कर दी गयी।

मुंबई कार्यसमिति की बैठक (जनवरी 2020) में सर्वसम्मति से सर्व सेवा संघ के अगले अध्यक्ष के निर्वाचन हेतु चुनाव प्रक्रिया के संचालन के लिए भवानी शंकर कुसुम को दो सहायक चुनाव अधिकारी—(1) रमेश पंकज व (2) जीवीवीएसडीएस प्रसाद की नियुक्ति की।

दुर्भाग्यवश चुनाव अधिकारी और हमारे प्रिय साथी भवानी शंकर कुसुम का 14 नवंबर 2020 को आकस्मिक निधन हो गया। इस कारण चुनाव अधिकारी की भूमिका के निर्वहन हेतु 21 नवंबर 2020 को कार्यसमिति की जूम बैठक में सर्वसम्मति से मुझे प्रभार सौंपा गया।

दिवंगत भवानी भाई द्वारा चुनाव की निर्धारित रूपरेखा का अनुपालन करते हुए निर्धारित तिथियों एवं समय पर प्रक्रिया संपन्न

सर्वसम्मति से चुनाव अधिकारी नियुक्त किया गया था। यह चुनाव 30-31 मार्च 2020 को केरल के कोट्टयम में सम्पन्न होना था। कोरोना महामारी के बढ़ते दुष्प्रभाव के चलते पूरे देश में लॉकडाउन घोषित हो गया तथा सभी प्रकार की परिवहन सेवाओं को स्थगित कर दिया गया। इन कारणों से प्रस्तावित अधिवेशन को स्थगित करना पड़ा।

23 सितंबर 2020 को आयोजित सर्व सेवा संघ कार्यकारिणी की जूम बैठक में चुनाव अधिकारी भवानी शंकर कुसुम ने चुनाव सम्पन्न कराने की आवश्यकता पर जोर दिया और सेवाग्राम, वर्धा में 28-29 नवंबर 2020 को अधिवेशन द्वारा चुनाव सम्पन्न कराने की घोषणा की। चुनाव अधिकारी ने चुनाव कार्यक्रम की भी घोषणा सार्वजनिक की। साथ ही उन्होंने चुनाव प्रक्रिया के व्यवस्थित संचालन के लिए करायी गयी। पूरी प्रक्रिया को सार्वजनिक सूचना द्वारा प्रसारित किया गया। तदुपरांत चुनाव के लिए निर्धारित तिथि तक एकमात्र लोकसेवक चंदन पाल का नामांकन पत्र हमारे समक्ष आया। जांच-परख के बाद उसे वैध पाया गया। नामांकन वापसी के निर्धारित समय तक प्रतीक्षा के बाद उपस्थित सभी प्रतिनिधियों के समक्ष श्री चंदन पाल, पुत्र-स्वर्गीय शिशिर कुमार पाल, सर्वोदय नगर, हावड़ा (पश्चिम बंगाल) को निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित घोषित किया गया। उपस्थित सभी सदस्यों ने इस घोषणा का स्वागत किया। इस तरह से सर्वोदय विचार के अनुरूप और प्रक्रिया का अनुपालन करते हुए चुनाव प्रक्रिया का समापन हुआ और भविष्य के लिए संगठन के व्यवस्थित संचालन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

-रमेश पंकज
चुनाव अधिकारी

तो इस तरह बदला जायेगा इतिहास

❑ आचार्य विनोबा

आजकल जो तालीम दी जाती है, उसमें ऐसे तो कई दोष हैं, लेकिन एक बड़ा भारी दोष यह है कि उसमें लोगों के दिमाग में इतिहास के नाम पर कई चीजें ठूंसी जाती है। तालीम में सबसे बड़ा भारी खतरा इस इतिहास शिक्षण ने खड़ा किया है। आज तो इतिहास में जो नहीं हुआ, वह भी लिखा जाता है। इतिहास जितने झूठे होते हैं उतनी कल्पित कहानियां भी झूठी नहीं होती, क्योंकि कहानी लिखने वाला पहले ही लिख देता है कि सारी कहानी कल्पित है। इतनी तो सच्चाई उसमें होती ही है। किंतु इतिहास लिखने वाला दावा करता है कि मैंने सारा सत्य लिखा है और दूसरा झूठ लिखता है। क्या आप समझते हैं कि इतिहास नाम की जो चीज पढ़ाई जाती है,वह भी कोई चीज है? यह जो दो महायुद्ध हो गए,उनका इतिहास जर्मनी ने एक ढंग से लिखा होगा, तो रूस, इंग्लैंड ने दूसरे ढंग से। किसने क्या गुनाह किया, क्या अन्याय किया, कौन सी घटना कब घटी, यह सब झूठ लिखा जाता है। महत्व के कागज जला दिए जाते हैं और फिर सबूत के लिए झूठे कागज तैयार किए जाते हैं।

अभी अखबार में एक मजेदार खबर पढ़ी कि रूस का इतिहास दुरुस्त करके फिर से लिखा जाएगा। फिर से लिखेंगे, इसका मतलब क्या होता है? क्या स्टालिन मर गया, सो नहीं मरा, ऐसा लिखेंगे? स्टालिन अपने जमाने में इतिहास का महागौरव बना । वह सब का सब झूठा समझ कर फिर से लिखा जाएगा। महात्मा गांधी एक क्रांति विरोधी व्यक्ति हैं,ऐसा उनके इतिहास में लिखा जाता था। अब लिखा जाएगा कि वे एक महापुरुष हो गए। ईश्वर की इतनी कृपा है कि वे हुए ही नहीं, ऐसा नहीं लिखते। इतना बदल वे नहीं करते, यही उनकी कृपा है।

सारांश, इतिहास अपनी - अपनी मर्जी से लिखे जाते हैं। लोगों के दिमाग विशेष प्रकार से बनाने के लिए पुरानी घटनाओं का उपयोग कर उन्हें लोगों के सामने रखा जाता है। यह सारा इतिहास बच्चों को सिखाया जाएगा। इतिहास बनाने वाले मर गए और विद्यार्थियों के दिमाग कहानियों के बोझ के नीचे दबकर मर रहे हैं। आखिर मरे हुए राजाओं की नामावली रटने की जरूरत ही क्या है? कौन सी घटना कब घटी, यह सुनने की कोई जरूरत नहीं। कितने राजा हुए,कोई हिसाब नहीं है। इन पेड़ों पर जितनी पत्तियां हैं, उतने राजा हो गए। उनका इतिहास पढ़ कर क्या करोगे? इतिहास के नाम से लोगों के दिमाग ढाले जाते हैं। परिणामस्वरूप कुल प्रजा पूर्वाग्रह से पीड़ित होती है और पुरुषार्थहीन भी बनती है।

हम इतिहास बनाने वाले!

भूदान का काम जब शुरू हुआ, तब लोग पूछने लगे कि इस तरह मांग-मांगकर काम कब पूरा होगा? और इससे मिलेगा भी क्या? इतिहास में कभी ऐसा हुआ भी है? तो हम कहते हैं कि इतिहास में बाबा भी कहां हुआ था? बाबा ही नया जनमा है, इसलिए वह नया इतिहास बनाता है। तुम लोग इतिहास बनाने वाले हो या पुराना इतिहास पढ़ने वाले? कर्तृत्व शून्य बनकर पुराना इतिहास पढ़ना और अनुमान निकालना हमारा धंधा नहीं! इतिहास में जो नहीं हुआ, वह कभी नहीं हो सकता, ऐसा क्यों कहते हैं? रामचंद्रजी ने बंसी नहीं बजायी, इसलिए क्या कृष्ण ने भी नहीं बजायी? रामचंद्रजी ने जो किया, वही कृष्ण को भी करना था, तो कृष्ण का जन्म ही क्यों होता? पुराने लोगों ने जो किया, वही करना था, तो हम लोगों ने जन्म ही क्यों पाया? परमेश्वर ने हमें जन्म दिया, तो हमने कौन-सा पुरुषार्थ किया? इसलिए पुराने इतिहास का कोई भी दबाव हमारे दिमाग पर नहीं पड़ना चाहिए। एक तो ये सारे इतिहास एकपक्षीय होते हैं। कह नहीं सकते कि उनमें सत्यता कितनी है! हमारा जन्म तो नये सत्य की सिद्धि के लिए, नये प्रयोग के लिए है। इसलिए विद्यार्थी और नागरिकों को इतिहास का दबाव दिमाग पर से हटा देना चाहिए।

इतिहास के अभिनिवेश से ही झगड़े

बेल्लारी कर्नाटक में है या आंध्र में? यह जानना हो, तो इतिहास क्या कहेगा? कुल आंध्रवासी इतिहास का निरीक्षण कर मान चुके हैं कि बेल्लारी आंध में है। कुल कन्नड़, निरीक्षण कर चुके हैं कि वह कर्नाटक में है। अब क्या करोगे इतिहास को? भूगोल क्या कहता है? बेल्लारी तो जिस जगह है, उसी जगह है। अब इतिहास से क्या सिद्ध होगा? हर एक प्रांत वाले अपने-अपने प्रांत की हद दूसरे प्रांत में घुसाते हैं। जैसे किसान अपनी हद एक हाथ दूसरे के खेत में बढ़ाकर उसे बढ़ाना चाहता है। कैसा हास्यास्पद प्रयत्न है! सामने बैठे बच्चे यह सुनकर हंस रहे हैं, पर आपकी असेम्बली में जोरों के साथ ये दावे कहे जाते हैं। जानते हैं कि वे सब निकम्मी बातें हैं, लेकिन एक भूत का आवेश जो हो जाता है। इसका कारण यह इतिहास ही है। ये पुराने इतिहास जिस ढंग से लिखे जाते हैं, उसी ढंग से पढ़ते हैं, तो अपना-अपना अभिमान बनता है। उसमें सत्यनिष्ठा टिक नहीं सकती।

इतिहास का सार ग्रहण करें

जब तक इतिहास का यह आग्रह और अभिनिवेश टलता नहीं, तब तक प्रगति नहीं कर सकेंगे। पुराना इतिहास देखकर काम करना चाहेंगे, तो परिणाम ऐसा ही होगा। इसलिए सचमुच प्रगति करना चाहते हों, तो इस युग में पुराने इतिहास का सार लेकर असार छोड़ देना चाहिए। इतिहास का बिल्कुल उपयोग नहीं, ऐसा हम नहीं कहते। भगवान व्यास जी ने एक सुंदर इतिहास 'महाभारत' लिखा है। मनुष्य के विधिक स्वभाव किस प्रकार हो सकते हैं, इस पर अपना दर्शन लिखा है। इस प्रकार के इतिहास से लाभ हो सकता है। लेकिन इतिहास का भूत सिर पर दबाव डालेगा, तो समाज की प्रगति कभी नहीं होगी। यह ठीक है कि पुराने लोगों ने जो पराक्रम किये, उसे समझने से ताकत आती है। लेकिन पुराने लोगों ने अच्छे काम किये, वैसे बुरे काम भी किये। तो, उनकी कुल-की-कुल चीजों का भार दिमाग पर क्यों उठाया जाये? उनकी अच्छी चीजें लेकर बुरी चीजें छोड़नी चाहिए। अगर हम पुराने इतिहास से चिपक के बैठेंगे तो यह विवेकशक्ति क्षीण हो जायेगी।

इतिहास में बुराइयों का रेकॉर्ड

विद्यार्थियों से कहा जाता है कि इतिहास में रीड बिटवीन द लाइन्स—बीच का पढ़ा करो और छपी हुई पंक्तियों को छोड़ दो। बीच में जो कोरा भाग है, वही पढ़ो। एक भाई ने एक सुंदर काव्यग्रंथ हमें भेजा। उसमें बीच-बीच में थोड़ा लिखा था और चारों ओर बहुत जगह छोड़ दी थी। सुंदर कविता थी, लेकिन कविता के आसपास जो कोरा हिस्सा था, उसमें ज्यादा काव्य था। इसी तरह जो इतिहास लिखा जायेगा, उससे ज्यादा महत्त्व का इतिहास वह होगा, जो नहीं लिखा जायेगा। कोई माता अपने बच्चे को प्रेम से खिलाती-पिलाती है, तो उसका कोई टेलिग्राम अखबार वालों को नहीं भेजा जाता। किन्तु कहीं अगर किसी का खून हुआ या चोरी हुई, तो फौरन तार भेजा जायेगा और इतिहास में भी वह लिखा जायेगा। मानव अपनी मानवता का इतिहास लिखता ही नहीं। मानवता पर जितना प्रहार होता है, उतना ही इतिहास में लिखा जाता है। इसलिए मानव स्वभाव का ज्ञान इतिहास से नहीं हो सकता। मानव स्वभाव विरोधी जितनी घटनाएं होती हैं, सबका उसमें 'रेकॉर्ड' होता है। और फिर जो इतिहास निर्माण होता है उसमें जिधर देखो उधर, हिंसा-ही-हिंसा दीख पडती है। इसलिए स्पष्ट है कि आजकल के इतिहास का ढंग ही खराब है। उसका दबाव पड़ने से शक्ति कुंठित हो जाती है, पुरुषार्थ मारा जाता है। ❑

बिहार का चुनाव : नतीजों से निकले नतीजे

❑ श्रीनिवास

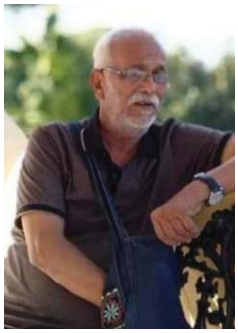

बिहार विधान-सभा चुनाव में प्रकट मुकाबला बेहद नजदीकी दीखता है. अनेक क्षेत्रों में अंतर इतना कम रहा कि कोई भी जीत सकता था; और किसी भी पक्ष को बहुमत मिल सकता था, मगर कुछ तथ्यों को ध्यान में रखें तो नतीजा इतना भी चौंकाने वाला नहीं दिखेगा. हर कोई जानता और मानता है कि लोजपा के कारण जदयू को भारी नुकसान हुआ. उनमें से अधिकतर सीटें राजद के खाते में गयीं. यानी गठबंधन/राजद को ओवैसी ने जो क्षति पहुंचाई होगी, उससे अधिक की भरपाई लोजपा ने कर दी.

आगे कुछ लिखने से पहले, मेरी नजर में, इस चुनाव के कुछ ठोस निष्कर्ष :

* तेजस्वी यादव के रूप में एक सम्भावनायुक्त युवा नेता का उदय/स्थापित होना. * पहले से उभर चुके और इस चुनाव में अंततः बड़बोले साबित हुए एक अन्य युवा चिराग पासवान का ठिकाने लग जाना. हालांकि वे 'हम तो डूबेंगे सनम, तुमको भी ले डूबेंगे' वाले अंदाज में नीतीश कुमार/जदयू को भारी क्षति पहुंचाने के लिए याद रखे जायेंगे. * अपने 'अंतिम चुनाव' वाले बयान से पलट कर, अंततः एक बार फिर मुख्यमंत्री बन चुके नीतीश कुमार का निस्तेज होकर भाजपा का लगभग अनुचर बन जाना. हालाँकि उनके निस्तेज होने की बात प्रभाव की दृष्टि से ही सही है, जनाधार के लिहाज से नहीं. * ध्यान रहे कि भाजपा को मिली जीत में जदयू समर्थकों का भरपूर योगदान रहा, जिन्होंने उसके पक्ष में मतदान किया; लेकिन जदयू के पिछड़ने का एक बड़ा कारण यह रहा कि भाजपा समर्थकों ने जदयू को उसी तरह वोट नहीं दिया.

* एक बार फिर स्थापित हुआ कि भाजपा अपराजेय नहीं है; और कम से कम राज्यों के चुनावों के सन्दर्भ में उत्तर भारत में भी 'मोदी मैजिक' जैसा कुछ नहीं है. * हिन्दी इलाके में ओवैसी के रूप में भाजपा के एक (प्रत्यक्ष या परोक्ष) मददगार और कथित सेकुलर दलों के लिए एक -खतरे का प्रादुर्भाव. * बिहार के ओबीसी समुदाय का बड़ा हिस्सा अब भी यादव नेतृत्व को पसंद नहीं करता है. * भाजपा को बिहार में भी 'छोटे भाई' की भूमिका से उबरना था; और वह इसमें सफल रही. * जहाँ भी क्षेत्रीय विकल्प है, कांग्रेस का जनाधार तेजी से ख़त्म हो रहा है. * हिंदू अतिवाद/सांप्रदायिकता को 'देशभक्ति' की ढाल हासिल है, आतः उससे मुकाबले के लिए काफी सतर्कता की जरूरत है. * और सबसे निर्विवाद यह कि वाम दलों के अलावा शायद ही किसी अन्य दल का कोई प्रत्याशी जाति, मजहब, गैरजरूरी उन्माद के बगैर अपने काम और समाज से जुड़ाव के बल पर जीता होगा.

अब जरा 'जनता' के 'जागरूक' और 'समझदार' होने को लेकर भ्रम की बात. मेरी समझ से सच यही है कि हमारा समाज (कमोबेश पूरे देश का) जाति और धर्म में विभाजित है. और अपवादों को छोड़ कर वह जाति, मजहब, कुनबों के आधार पर मतदान करता है. कहीं कहीं और कभी-कभी दूसरे मुद्दे- भाषा, क्षेत्र आदि- भी प्रभावी हो सकते हैं, पर मूल रूप से यह 'जागरूक' जनता संकीर्ण आधारों पर ही मतदान करती है.

एक बात और कि 'जनता' कोई एक इकाई नहीं है. यह बात बिहार सहित पूरे देश के सन्दर्भ में सच है. मान लें कि बिहार में छह करोड़ मतदाता हैं, तो प्रत्येक मतदाता 'जनता' भी है, जो खुद अकेले फैसला करता है कि किसे वोट देना या नहीं देना है. ऐसे फैसले सामूहिक भी होते हैं, पर सिद्धांततः भी यह मतदाता का निजी फैसला होता है. तब यह कहना कि 'बिहार की जनता ने' या देश की जनता ने फलां दल/नेता के पक्ष में जनादेश दिया है, पूरी तरह सही नहीं है. कभी भी 'जनता' एक जगह जमा होकर सामूहिक रूप से ऐसा फैसला नहीं करती है. हाँ, जिस दल या प्रत्याशी के पक्ष में 'बहुमत' होता है, उसे विजयी माना जाता है; और तकनीकी रूप से जनादेश को उसके पक्ष में कहा जा सकता है.

बिहार के इन नतीजों का कारण समझने के लिए 2014 के संसदीय चुनाव और उसके तुरत बाद हुए विधानसभा चुनाव नतीजों को याद कर लें. इसके भी पहले बिहार की सामाजिक बनावट, जो इस राज्य की राजनीतिक खेमेबंदी का आधार है, को जान लेते हैं. लालू प्रसाद और नीतीश कुमार के प्रभाव के दो खेमे (जिनको सामाजिक न्याय के पक्षधर कहने का भी प्रचलन है), जो क्रमशः यादव और कुर्मी-कोइरी आदि पिछड़ी, अति पिछड़ी जातियों का जमावड़ा है, और तीसरा सवर्ण हिंदुओं के साथ खड़े कुछ अन्य ऐसे (तमाम जातियों के) हिंदुओं का खेमा, जिनके अंदर संघ अपने सतत प्रयास से 'हिंदू होने के गर्व' का और गैर हिन्दुओं के प्रति संदेह और नफरत का भाव भरने में सफल हो सका है. मुस्लिम मत स्वाभाविक ही उस दल/खेमे को मिलता है, जो भाजपा के खिलाफ हो. जाहिर है, इनमें से दो खेमों का साथ होना जीत की लगभग गारंटी है.

बेशक एक तबका ऐसा भी है, जो इन संकीर्णताओं से मुक्त रहता है; साथ ही सरकार के अच्छे काम से प्रभावित और उसके गलत फैसलों से नाराज होकर वोट देता है. मगर यह समूह इतना छोटा है कि जहां जीत-हार का अंतर अत्यंत क्षीण हो, वहीं इसका असर होता होगा/है. संभवतः बिहार में नशाबंदी, स्थानीय निकायों में आरक्षण सहित कुछ अन्य सकारात्मक काम के कारण नीतीश समर्थक महिलाओं का एक वोट बैंक भी बना है. पर इसका नतीजों पर कितना असर हुआ, कहना कठिन है.

2014 के आम चुनाव में उपर्युक्त तीनों खेमे अलग अलग लड़े, भाजपा आसानी से जीत गयी. अगले साल 2015 के विधानसभा चुनाव में लालू-नीतीश साथ हो गये, आसानी से जीते. दोनों चुनावों में तीनों खेमों को मिले मत का प्रतिशत भी लगभग समान रहा. तो फिर इस चुनाव में जब नीतीश भाजपा के साथ थे, तो नतीजा एनडीए के पक्ष में जाए, यही स्वाभाविक था. फिर भी राज्य सरकार के खिलाफ कथित असंतोष, कोरोना संकट में सरकार/नीतीश कुमार की संवेदनहीनता, मंहगाई और बेरोजगारी आदि के कारण यह कयास लगाया गया कि लोग बदलाव चाहते हैं. लेकिन इसके पीछे शायद बदलाव के समर्थकों, यानी एनडीए विरोधी लोगों की सद्इच्छा ही थी.

नतीजों के बाद पराजित पक्ष अक्सर चुनाव में धांधली की शिकायत करता ही है. इस बार भी ऐसी अनेक गंभीर शिकायतें हैं. और यह भी तय है कि अब इन पर कोई सुनवाई नहीं होगी. सरकार भी बन ही गयी है. यानी यही फाइनल नतीजा है. फिर भी तीन चरणों के नतीजों को देखें तो यह सवाल जेहन में उठता ही है कि आखिर पहले चरण में इतना आगे रहने के बाद दूसरे और तीसरे चरण में महागठबंधन इतना कैसे पिछड़ गया. जरा नतीजों पर गौर करें-पहला फेज : राजद-43, भाजपा-21; दूसरा फेज : राजद-42, भाजपा-52; तीसरा फेज : राजद-20; भाजपा-53. ऐसा कैसे हुआ?

कहा जा रहा है कि पहले चरण में पिछड़ने का एहसास हो जाने पर भाजपा ने रणनीति बदली, पूरा जोर लगा दिया. यानी? एक- भारी मात्रा में पैसे झोंके गये (यानी बांटे गये). दो- राज्य के मुद्दों के छोड़ कर पुलवामा-बालाकोट, धारा 370, आतंकवाद, 'भारत माता' आदि पर जोर दिया गया. सच क्या है, पता नहीं. पर बाद के दो चरणों में हुआ बदलाव चकित करने वाला तो है ही. अब यह देखना रोचक होगा कि भाजपा और अपनी औकात और चमक खो चुके नीतीश कुमार का रिश्ता कब तक सहज रहता है.

अंत में- वाम दलों को मिली सफलता ने दिखाया है कि जन सरोकार और संघर्ष की राजनीति की प्रासंगिकता बची हुई है. ❑

श्रद्धांजलि

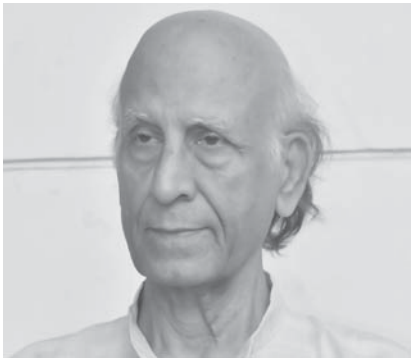

भवानी शंकर 'कुसुम'

भवानी भाई अपनी युवावस्था में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन, 1975, के गर्भ निकले थे। शुरू में भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष करना, सामाजिक बदलाव के लिए निर्माण के काम और सर्वोदय परीक्षाओं मे युवाओं को बिठाना, ये काम करते रहे। आगे मोर्चे निकालने, निवेदन देने जैसे काम सम्पूर्ण राजस्थान में नशाबंदी के समर्थन में किए। जब वे सर्वोदय से जुड़ गए तो सहारिया आदिवासियों को दी गयी भूदान जमीन के विकास के लिए पदयात्रा की तथा ग्राम स्वराज का काम कैसे किया जाए, इसका प्रबोधन किया। उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा के लिए रात्रिशाला, नशाबंदी, स्वास्थ्य एवं सफाई, व्यक्तिगत एवं सामूहिक स्वच्छता, अदालत मुक्ति, धर्म, जाति एकात्मता आदि का प्रचार कर शांति के लिए गांधी मूल्य स्थापित करने के लिए शुरू से काम किया।

गांधी, विनोबा, जेपी के काम को निश्चित अंजाम देने के लिए उन्होंने 1984 में 'ग्राम भारती समिति' बनाई। ग्राम भारती में मुख्यतः महिलाओं के सशक्तीकरण, उनके हक और आत्म निर्भरता, नैसर्गिक संसाधनों को बचाना, परती जमीन को उपजाऊ बनाना, कुष्ठ रोगियों की सेवा, आदिवासी बच्चों के लिए विद्यालय हेतु उन्होंने जयपुर के करीब 266 देहातों में काम किया।

ग्राम भारती समिति ने करीब 3000 कुष्ठ रोगियों का पुनर्वास किया। उनके लिए न केवल निवास तथा भोजन का प्रबंध किया, बल्कि उन्हें स्वावलंबी होने के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया। इससे वे एक सम्मान की जिंदगी जी रहे हैं। इसके लिए वे बाबा आमटे से भी मार्गदर्शन लेते रहे।

करीब साढ़े छः सौ स्वयं सहायता समूहों द्वारा 78 गांवों में महिला सशक्तीकरण का काम है। अब ये महिलाएं बिना परदे के बोलने लगी हैं। दरियाँ और गलीचे बुनना, कशीदाकारी, दुग्ध व्यवसाय, चूड़ियाँ, जूते (पगरखी), पत्तल बनाना आदी काम ये महिलाएं अपने घरों से कर रही हैं। इन सबसे विशेष है कि इन्होंने अपना स्वयं का सहकारी बैंक भी बनाया है, जिसका संचलन केवल महिलाएं ही कर रही हैं।

इसी तरह परती जमीन में पेड़ लगाना, जल स्तर बढ़ाना, पर्यावरण का जीवन में स्थान समझाना, पर्यावरण स्नेही जीवन शैली के मूल्य समझाना, जानवरों का पालन बढ़ाना आदि सब के लिए आस पास के गांवों की महिलाओं एवं युवाओं को प्रशिक्षित करना, उन्हें सामूहिक हित के लाभ समझाना तथा इसके लिए व्यवस्थापन का प्रशिक्षण भी ग्राम भारती देती है। भवानी भाई के गांधीवन का काम विशाल काम है, पर अब उसे टिकाना देशव्यापी संगठन का काम होगा।

इसके साथ पुराने जल स्रोतों का पुनरुज्जीवन कर लोगों को स्वच्छ पेय जल उपलब्ध कराना, घूमता स्वास्थ्य सेवा केंद्र चलाना ये काम सतत चल रहे हैं। पर इन सबमें लघु फिल्म, कठपुतली, चर्चा सत्र, परिसंवाद, महनीय व्यक्तियों द्वारा प्रबोधन आदि माध्यमों से एकात्मता, अंध श्रद्धा निर्मूलन आदि की समझ बढ़ाने के काम में संस्था के साथ सभी ग्राम स्वराज को मानने वाले योगदान दें, यह उनकी अपेक्षा होती है, ताकि गांव की समझ बढ़े और सामूहिक हित के काम अधिक हों।

ऐसा करते वक्त कीर्तन के माध्यम से धर्म का असली स्वरूप समझाना, किताबों एवं ग्रंथालय के माध्यम से लोगों में पढ़ने की आदत डालना, परंपरागत अच्छी बातों को बढ़ावा देना, सीढ़ीदार कुओं को सुस्थिति में लाना आदि कामों में युवाओं तथा महिलाओं को प्रशिक्षित करना, ये सब भवानी भाई ने किया।

×

शशि बहन त्यागी

शशि बहन ने लक्ष्मीचंद त्यागी के साथ 1980 में राजस्थान के सूखे इलाके में काम शुरू किया। दोनों पहले उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले के बनवासी सेवा आश्रम में थे। लिंग भेद, परदा प्रथा, महिला उत्पीड़न, अशिक्षा, कुदरती स्रोतों का अपव्यय और उस कारण उपजी सभी तरह की सामाजिक बुराइयाँ आदि के बारे में जब लोग कुछ समझने लगे, तो उन्होंने सर्वोदय विचार परीक्षाएं करवाईं और ग्रामीण विकास संस्था का निर्माण किया। लोग इसे ग्राविस कहते हैं।

ग्राविस ने जागरूकता के काम खूब किया। जिन समूहों को जरूरत है, जो शोषित- वंचित हैं, उन्हें चिन्हित कर काम करना, ग्रामीणों द्वारा चालित ग्रामीण समूह बनाना, इसमें ग्रामीण समूह की भागीदारी अनिवार्य होना और उसे स्थाई रूप देना, अपने जैसे काम करने वाले औरों से जुड़ना आदि प्रमुख हैं।

फिर उन्होंने निम्न जल स्रोत निर्माण एवं उसकी सामूहिकता, खेती और वृक्षारोपण, महिलाओं को दुग्ध व्यवसाय से स्वावलंबी बनाना, स्वास्थ्य रक्षा, मजदूरों के हक और उनकी सुरक्षा पर काम शुरू किया। ग्राविस का काम राजस्थान के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र के करीब 1200 गांवों में है।

पहले तो इन्होंने देहात विकास समितियाँ गठित की, जिसमें 30 प्रतिशत महिलाओं के लिए खास स्थान रखे। इन समितियों को उन्होंने प्रशिक्षित किया कि वे कैसे गाँव के सामूहिक हित को चिन्हित करें, उसमें स्थानीय पुरुष एवं महिलाओं की भागीदारी कैसे बढ़े। इसके साथ ही संस्था के काम और सरकारी योजनाओं को कैसे लागू कराये, यह भी सिखाया।

जल संरक्षण में ग्राविस ने न केवल ग्रामीणों के ज्ञान का उपयोग कर परंपरा का संयोजन किया, बल्कि नए शास्त्रीय ढंग से भी काम लेकर जल संरक्षण का काम किया। इससे महिलाओं का समय बचा, स्वास्थ्य पर बुरा असर कम हुआ, किसानों की आय बढ़ी।

ग्रामीण लोगों ने बीज बैंक भी बनाया है। जलावन, आयुर्वेदिक दवाएं, और चारा भी मिले, ऐसा समन्वय इस काम की विशेषता है। राजस्थान के रेतीले क्षेत्र में आने वाले फल, सब्जियां भी ग्रामीणों को न केवल सिखाई गयीं, बल्कि इस पर काम भी हुआ है।

ग्रावीस ने केवल किसानों की आय नहीं बढ़ायी, उनकी सहकारी समितियाँ भी बनायी, जिससे वे एक दूसरे को सहायता तो करते ही हैं, स्वयं संचालन भी करते हैं और फसल का नियोजन भी। शिक्षा के क्षेत्र में भी इन्होंने रेतीले इलाके में काम किया और फिर सरकार को वे विद्यालय सौप दिए। इसके साथ ही खदान मजदूरों के लिए भी उन्होंने बहुत काम किया है। इन मजदूरों के बच्चों के लिए विद्यालय, खदान मालिक और मजदूरों के बीच समन्वय, इन्हें सरकारी मदद उपलब्ध कराना, इनका सरकार द्वारा नियमित परीक्षण करवाना आदि काम खूब हुए हैं।

स्वास्थ्य के लिए संस्था का अपना अस्पताल भी है। इसमें सारे काम समूह की महिलाएं देखती हैं। ऐसी सभी संस्थाओं को हमें सर्वोदय अभियान से जोड़ना चाहिए। इनके कार्यकर्ताओं का शांति, समानता और न्यायपूर्ण समाज निर्माण के लिए प्रशिक्षण करवाना चाहिए।

-डॉ. सुगन बरंठ

अर्णब प्रकरण, कुणाल कामरा के ट्वीट और सुप्रीम कोर्ट की साख

❑ विजय शंकर सिंह

अटॉर्नी जनरल की संस्तुति के बाद अगर सुप्रीम कोर्ट में, कुणाल कामरा पर मानहानि का मुकदमा चलता है तो, यह इस साल की दूसरी बड़ी मानहानि की कार्यवाही होगी, जो देश की लीगल हिस्ट्री में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखेगी। पहला प्रशांत भूषण का मुकदमा था और दूसरा कुणाल का होगा। कुणाल न तो कोई एडवोकेट हैं और न ही समाज को बदलने की सनक में लिप्त कोई एक्टिविस्ट, बल्कि वे एक स्टैंड अप कॉमेडियन हैं और लोगों का मनोरंजन करते हैं। उनके आठ ट्वीट, कानून के छात्रों को असहज और आहत कर गये हैं, जिनकी पृष्ठभूमि अर्णब गोस्वामी के पक्ष में दिया गया सुप्रीम कोर्ट का ताजा फैसला है।

अर्णब गोस्वामी की अंतरिम जमानत यात्रिका पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि ''अगर राज्य सरकारें व्यक्तियों को टारगेट करती है, तो उन्हें पता होना चाहिए कि नागरिकों की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए शीर्ष अदालत है। हमारा लोकतंत्र असाधारण रूप से लचीला है, महाराष्ट्र सरकार को इस सब (अर्णब के टीवी पर ताने) को नजरअंदाज करना चाहिए।''

सुनवाई के दौरान जस्टिस चंद्रचूड़ ने यह भी कहा कि ''यदि हम एक संवैधानिक न्यायालय के रूप में व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा नहीं करेंगे, तो कौन करेगा?...अगर कोई राज्य किसी व्यक्ति को जानबूझकर टारगेट करता है, तो एक मजबूत संदेश देने की आवश्यकता है।''

सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में, निजी स्वतंत्रता के सिद्धांत को प्राथमिकता दी, जो एक अच्छा दृष्टिकोण है और इसे सभी के लिए समान रूप से लागू किया जाना चाहिए। राज्य को किसी भी नागरिक को प्रताड़ित करने का अधिकार नहीं है। पर यह चिन्ता सेलेक्टिव नहीं होनी चाहिए।

लेकिन क्या यह स्थिति केवल इसी विशेष मामले के लिए है या फिर सुप्रीम कोर्ट ने इस सुप्रीम सिद्धांत को सबके लिए लागू करने के बारे में सोचा है। इस पर आरटीआई एक्टिविस्ट साकेत गोखले ने सुप्रीम कोर्ट से, एक आरटीआई दायर कर कुछ सवाल पूछे हैं—* अंतरिम जमानत के लंबित मामलों की संख्या, * एक अंतरिम जमानत की अर्जी को निपटाने में लगने वाला औसतन समय, * एक अंतरिम जमानत की याचिका को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध करने में लगने वाले समय का विवरण।

निजी स्वतंत्रता केवल एक व्यक्ति का ही संवैधानिक अधिकार नहीं है, बल्कि उन सबका मौलिक अधिकार है, जो अदालतों में अपनी जमानत के लिए पहुंचते हैं। जब निजी आजादी के मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट फिक्रमंद हो तो, यह आंकड़े भी देख लिये जाने चाहिए।

* 31 दिसंबर 2019 को कुल 330487 लोग विचाराधीन कैदी के रूप में जेल में बंद हैं। क्या इन सभी के मामले में उचित न्यायिक और कानूनी प्रक्रिया का पालन हुआ है? * इनमें से कितने लोग ऐसे हैं, जो जमानत के पात्र नहीं होंगे या वास्तव में अपराधी होंगे? * इनमें से 41511 लोग 2 साल से ज्यादा की अवधि से बंद हैं। * 330487 में से 69302 लोग अनुसूचित जाति और 34756 लोग अनुसूचित जनजाति के हैं। * मध्य प्रदेश में सबसे ज्यादा आदिवासी 5894 और उत्तर प्रदेश में अनुसूचित जाति के 17995 लोग जेल में बंद हैं। * विचाराधीन कैदियों में 94533 लोग निरक्षर और 134749 लोग पांचवीं से कम शिक्षित हैं। * 1212 विचाराधीन महिला कैदी अपने बच्चों के साथ कारावास में हैं। इन महिलाओं के साथ 1409 बच्चे भी जेल में हैं।

हम अक्सर भूल जाते हैं कि स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व से लेकर समस्त जनतांत्रिक अधिकार फ्रांसीसी व उसके बाद की क्रांतियों के जरिये जनता ने बलपूर्वक ले लिये थे, किसी जज ने फैसले में लिखकर नहीं दिये थे। जजों के फैसले अधिकार छीन या दे सकते हैं, उन्हें लेना तो जनता को खुद ही पड़ता है।' अब कुछ उदाहरण पढ़िये जो अपनी जमानत के लिए लंबे समय से प्रयासरत हैं और उन्हें वह राहत नहीं मिली है, जो सुप्रीम कोर्ट ने अर्णब को आनन फानन में दे दी है।

पहला प्रकरण है, भीमा कोरेगांव मामले में जेल में बंद, 85 वर्ष के अभियुक्त स्टेन स्वामी का। उनकी जमानत की अर्जी यूएपीए की विशेष अदालत में लंबित है, जिस पर सुनवाई चल रही है। स्टेन स्वामी पारकिंसन रोग से पीड़ित हैं और इस कारण वे किसी खुले बर्तन से कोई भी तरल पदार्थ नहीं पी सकते हैं। उन्होंने अदालत से यह अनुरोध किया कि उन्हें पानी या तरल पदार्थ पीने के लिए एक स्ट्रा या सिपर उपलब्ध करा दिया जाय। वे अपने साथ अपने बैग में स्ट्रा और सिपर लेकर चलते भी हैं। जब उनकी गिरफ्तारी हुई थी, तो यह सब उनके बैग में था भी। अदालत ने स्ट्रा दिलाने के उनके प्रार्थना पत्र पर इस केस के विवेचक एनआइए से आख्या मांगी। एनआइए ने इस पर आख्या देने के लिए बीस दिन का समय मांगा। बीस दिन में एनआइए यह तय कर पायेगा कि स्ट्रा दिया जाय या नहीं। अब स्वामी तब तक या तो मुंह के अगल बगल पानी चुआते पानी पीयें या फिर प्यासे रहें।

दूसरा प्रकरण है, वरवर राव का, जो अर्णब गोस्वामी के मुकदमे से पहले का है। लेकिन राव से अर्णब तक, कानून तो नहीं बदला पर उनकी व्याख्या और प्राथमिकताएं बदल गयीं या अदालत का दृष्टिकोण बदल गया, यह विचारणीय है। वरवर राव की याचिका पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट को यह निर्देश दिया था कि वह वरवर राव के स्वास्थ्य को देखते हुए मेडिकल आधार पर जमानत के लिए विचार करे। लेकिन खुद जमानत नहीं दी थी। याचिका में कहा गया कि निरंतर जेल में रहने और उनके साथ अमानवीय तथा क्रूरतापूर्ण व्यवहार होने के कारण उनकी हालत बहुत खराब हो गयी है और वे बीमार हैं। उनकी वकील सुप्रीम कोर्ट की वरिष्ठ एडवोकेट

इन्दिरा जयसिंह ने कहा था कि ''राव को उनके खराब हो रहे स्वास्थ्य के आधार पर जमानत न देना, नागरिक के स्वस्थ रहने के अधिकार का उल्लंघन है। संविधान न केवल जीवन का अधिकार देता है, बल्कि वह सम्मान और स्वास्थ्यपूर्वक जीने का भी अधिकार देता है। इस प्रकार याचिकाकर्ता सम्मान और स्वस्थ होकर जीने के अधिकार से भी वंचित रखा जा रहा है।''

इतने भारी भरकम शब्दों की दलील को न भी समझें तो यह समझ लें कि वरवर राव बीमार हैं और उन्हें इलाज चाहिए। मुंबई की जेल में वरवर राव को जुलाई में कोरोना का संक्रमण हो गया था और उनकी उम्र तथा अन्य व्याधियों को देखते हुए नानावटी अस्पताल में चिकित्सकों ने चेकअप कर, माह जुलाई के अंत में यह सलाह दी थी कि उन्हें गहन चिकित्सकीय देखरेख की जरूरत है। लेकिन, अस्पताल की इस गंभीर रिपोर्ट के बाद भी 28 अगस्त को उन्हें सिर्फ इसलिए तलोजा जेल वापस भेज दिया गया ताकि कहीं मेडिकल आधार पर उनकी जमानत अदालत से न हो जाय। यह बात इंदिरा जयसिंह द्वारा सुप्रीम कोर्ट में कही गयी, ''वह किसी भी अभिरक्षा में हुई मृत्यु के लिए जिम्मेदार नहीं होना चाहती, इसलिए अगर जमानत नहीं, तो कम से कम यही आदेश अदालत जारी कर दे कि जब तक बाम्बे हाईकोर्ट उनकी जमानत अर्जी पर कोई फैसला नहीं कर देता है, उन्हें बेहतर चिकित्सा के लिए नानावटी अस्पताल में भर्ती करा दिया जाय।''

अब सुप्रीम कोर्ट ने जो कहा, उसे पढ़िये और अर्णब गोस्वामी के मामले में 11 नवंबर 2020 को सुप्रीम कोर्ट ने जो व्यवस्था दी, उसे भी देखिये तो लगेगा कि क्या यह सुप्रीम कोर्ट की निजी आजादी के मसले पर किसी चिन्ता का परिणाम है या कोई अन्य कारण है। जस्टिस यूयू ललित ने कहा कि इस मुकदमे के तीन पहलू हैं, * प्रथम, सक्षम न्यायालय ने इस मामले में संज्ञान ले लिया है और अभियुक्त न्यायिक अभिरक्षा में जेल में है, अतः यह गिरफ्तारी अवैध नहीं है। * द्वितीय, जमानत की अर्जी विचार के लिए बॉम्बे हाईकोर्ट में लंबित है। * और अंतिम, राव की जमानत पर विचार करते हुए हाईकोर्ट, उन्हें मुकदमे के गुण-दोष के आधार पर जमानत देता है या उनके स्वास्थ्य के आधार पर, यह क्षेत्राधिकार फिलहाल हाईकोर्ट का है। अतः हम यह मामला कैसे सुन सकते हैं?

यानी सुप्रीम कोर्ट के दखल देने का कोई न्यायिक अधिकार नहीं है। पीठ ने इस बात पर तो चिन्ता जताई कि हाईकोर्ट ने इस मुकदमे की सुनवाई करने में देर कर दी। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने इस स्तर पर कोई भी दखल देने से इनकार भी कर दिया। सुप्रीम कोर्ट का मानना था कि हाईकोर्ट के समक्ष इस मामले में कई बिन्दु हैं और वह इन पर विचार कर रही है तो सुप्रीम कोर्ट का फिलहाल दखल देना उचित नहीं होगा।

तीसरा प्रकरण है, केरल के पत्रकार सिद्दीक कप्पन का। अर्णब के मुकदमे के दौरान जब सुप्रीम कोर्ट में निजी आजादी के सवाल पर बहस चल रही थी तो केरल के पत्रकार सिद्दीक कप्पन का भी उल्लेख हुआ, जो हाथरस गैंगरेप कांड की कवरेज में जाते समय गिरफ्तार किये गये थे। कप्पन की गिरफ्तारी यूएपीए कानून में की गयी है और वे महीने भर से अधिक समय से जेल में हैं। लेकिन इस बिन्दु पर सुप्रीम कोर्ट ने एक शब्द भी नहीं कहा, जबकि उसी के कुछ घंटे पहले जस्टिस चंद्रचूड़ यह कह चुके थे कि निजी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए वह सदैव तत्पर रहेंगे।

अर्णब का मुकदमा तो उनकी निजी आजादी से जुड़ा भी नहीं है। अर्णब धारा 306 आईपीसी के मुलजिम के रूप में शीर्ष न्यायालय में खड़े थे न कि एक पीड़ित के रूप में। वे गिरफ्तार किये गये थे और मैजिस्ट्रेट ने 14 दिन की ज्यूडिशियल कस्टडी रिमांड स्वीकृत कर उन्हें जेल भेजा था। अर्णब ने बॉम्बे हाईकोर्ट में बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका दायर की। हाईकोर्ट ने खुद तो कोई राहत नहीं दी, पर सेशन कोर्ट को यह निर्देश दिया कि वह चार दिन में मुलजिम की जमानत अर्जी पर सुनवाई करे। अर्णब ने सेशन में जमानत की अर्जी दायर भी की।

पर वे तुरंत सुप्रीम कोर्ट चले गये और वहां भी उन्होंने अंतरिम जमानत का प्रार्थनापत्र दिया। सुप्रीम कोर्ट ने निजी आजादी की बात की और पूरी बहस इस पर केन्द्रित कर दी गयी कि पुलिस ने मुलजिम की निजी आजादी को बाधित किया है। पूरी बहस में यह कानूनी बिन्दु उपेक्षित रहा कि धारा 306 आईपीसी के अभियुक्त की जमानत की अर्जी अगर सेशन कोर्ट में है और दूसरे ही दिन उसकी सुनवाई लगी है तो आज ही अनुच्छेद 142 के अंतर्गत दी गयी शक्तियों का उपयोग कर अर्णब को उसी दिन छोड़ना क्यों जरूरी था, जबकि पहले भी ऐसे मामलों में सुप्रीम कोर्ट में निचली और सक्षम न्यायालय में जाने के लिए निर्देश दिये जाने की परंपराएं रही हैं। अर्णब को सुप्रीम कोर्ट द्वारा अंतरिम जमानत पर रिहा किये जाने की अलग-अलग प्रतिक्रिया हुई है। शीर्ष अदालत के इस निर्णय पर सवाल भी खड़े हो रहे हैं, क्योंकि अर्णब के मामले में जो उदार रुख सुप्रीम कोर्ट का रहा है, वह इसी तरह के अन्य मामलों में नहीं रहा है। अंतरिम राहत या अन्य जो भी मामले सुप्रीम कोर्ट में गये, उनमें यही निर्देश मिला कि वे अधीनस्थ न्यायालय में जांय।

स्टैंडअप कॉमेडियन कुणाल कामरा ने सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले पर कई ट्वीट किये और यह कहा कि यह सुप्रीम कोर्ट नहीं, सुप्रीम जोक बन गया है। कुणाल के ट्वीट पर कुछ एडवोकेट और कानून के छात्र आहत हो गये और उन्होंने कुणाल के खिलाफ अवमानना की कार्यवाही चलाने के लिए कंटेम्प्ट ऑफ कोर्ट के अंतर्गत अटॉनी जनरल से अपनी याचिका पर सहमति देने के लिए कहा, जो अटॉर्नी जनरल ने दे भी दी। अटॉर्नी जनरल की सहमति के बाद कुणाल कामरा का एक और ट्वीट उनके एक पत्र के साथ आया, जो उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के जजों को संबोधित करते हुए लिखा है। ''मेरे विचार बदले नहीं हैं क्योंकि दूसरों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता से जुड़े मामलों पर सुप्रीम कोर्ट की चुप्पी की आलोचना न हो, ऐसा नहीं हो सकता। मेरा अपने ट्वीट्स को वापस लेने या उनके लिए माफी मांगने का कोई इरादा नहीं है। मेरा यकीन है कि मेरे ट्वीट्स खुद अपना पक्ष बखूबी रखते हैं।''

''क्या मैं सुझा सकता हूं कि मेरी सुनवाई का वक्त नोटबंदी की याचिका, जम्मू-कश्मीर का खास दर्जा वापस मिलने को लेकर दायर की गयी याचिका और इलक्टोरल बॉन्ड जैसे उन अनगिनत मामलों को दिया जाये, जिन पर ध्यान दिये जाने की ज्यादा जरूरत है। अगर मैं वरिष्ठ वकील हरीश साल्वे की बात को थोड़ा घुमाकर कहूं तो, क्या अगर ज्यादा महत्त्वपूर्ण मामलों को मेरा वक्त दे दिया जाये तो आसमान गिर जायेगा?''

कुणाल कामरा के इस ट्वीट को लेकर सोशल मीडिया और अखबारों में काफी चर्चा हो रही है। ट्विटर पर हैशटैग कुणाल कामरा और कंटेम्प्ट ऑफ कोर्ट ट्रेंडिंग में ऊपर है और पक्ष

विपक्ष के लोग अपनी-अपनी बातें कह रहे हैं। कुणाल के ट्वीट न्यायालय की अवमानना है या नहीं, यह तो न्यायालय ही तय करेगा पर कुणाल ने अपने पत्र में जो सवाल उठाये हैं, उनके उत्तर जानने की जिज्ञासा भी हम सबको होनी चाहिए। अगर अर्णब गोस्वामी अपनी एंकरिंग के कारण, जेल में बंद होते तो उनकी अभिव्यक्ति की आजादी के साथ हम सब भी खड़े होते। पर वे तो धारा 306 आईपीसी (आत्महत्या के लिए उकसाना) के आरोप में जेल में थे। इस प्रकार संविधान के अनुच्छेद 142 के अंतर्गत दी गयी असाधारण शक्तियों का उपयोग सुप्रीम कोर्ट ने किसी पीड़ित याचिकाकर्ता के लिए नहीं, बल्कि एक आपराधिक मुकदमे में गिरफ्तार एक मुलजिम के लिए किया है, जिसके पास नियमित रूप से विधिक उपचार प्राप्त करने के साधन उपलब्ध हैं।

अर्णब के मामले में सवाल, उनके मुकदमे की सुनवाई के लिए कतार तोड़कर, प्राथमिकता के आधार पर हुई लिस्टिंग के बारे में भी उठ रहे हैं। याचिका दायर करने के चौबीस घंटे के अंतर्गत उनकी याचिका सुनवाई के लिए सूचीबद्ध भी कर दी गयी। सुप्रीम कोर्ट में लिस्टिंग को लेकर पहले भी विवाद उठ चुके हैं। चार जजों की प्रसिद्ध प्रेस कान्फ्रेंस जो 12 जनवरी 2018 को हुई थी, में एक मुद्दा याचिकाओं की लिस्टिंग का भी था और इसे लेकर तब भी यही कहा गया था कि सुप्रीम कोर्ट में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है। साथी जजों के इस कृत्य को न तो अदालत की अवमानना मानी गयी और न ही इसे निन्दा भाव से देखा गया। सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष दुष्यंत दवे ने इस संबंध में सीजेआई को एक पत्र भी लिखा था और रजिस्ट्री में व्याप्त अनियमितता पर सवाल भी उठाये थे।

अर्णब गोस्वामी को 50 हजार रुपये के मुचलके पर अंतरिम जमानत सुप्रीम कोर्ट ने दी है। अर्णब धारा 306 आईपीसी के एक मुलजिम हैं और उनका एक नियमित जमानत के लिए प्रार्थना पत्र सेशन कोर्ट रायगढ़ के पास सुनवाई के लिए लंबित था। इस राहत पर कुछ कानूनी सवाल भी खड़े होते हैं।

अब यह दायित्व सुप्रीम कोर्ट का ही है कि वह खुद को इस संक्रमण से संक्रमित न होने दे और संविधान की सबसे महत्त्वपूर्ण संस्था की गरिमा हर दशा में बनाये रखे। ❑

ग्राउंड रिपोर्ट

संघी 'ताने-बाने' में सिसक रही बनारसी बुनकरों की जिंदगी

-शिव दास प्रजापति

बनारस प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संसदीय क्षेत्र है। यहां की बनारसी साड़ियां विश्वविख्यात हैं। बनारसी साड़ियों के कुटीर उद्योग से लाखों लोगों का परिवार चलता है। आज यह उद्योग बर्बादी की कगार पर है। बुनकर समुदाय आंदोलन की राह पर है। 15 अक्तूबर से 1 नवंबर तक मुर्री बंद कर पूर्व की तरह फ्लैट रेट पर बिजली मुहैया कराने की मांग कर चुका है। अधिकारियों के आश्वासन पर उसने दीपावली तक अपनी हड़ताल स्थगित की थी। अब दीपावली बीत चुकी है। बिजली विभाग की तरफ से उन्हें अभी तक कोई खास राहत नहीं मिली है। आंदोलन के लिए वे फिर मुखर होने लगे हैं। जल्द ही वे मुर्री बंद कर हड़ताल पर जा सकते हैं। 17 नवंबर को शास्त्री घाट पर साझा बुनकर मंच की तरफ से अपनी मांगों को लेकर एक विशाल विरोध-प्रदर्शन किया गया। पढ़िए बनारसी बुनकरों के हालात पर यह ग्राउंट रिपोर्ट। **-सं.**

'हम पॉवरलूम नहीं लगाना चाहते हैं। बिजली अब यूनिट पर हो गई है। लोगों को अपनी मशीनें कबाड़ में बेचनी पड़ेंगी। अब बिजली का बिल भी देना मुश्किल हो गया है।'

यह कहना है बनारस के जलालीपुरा निवासी हथकरघा (हैंडलूम) बुनकर शकील अहमद का। तीस वर्षीय शकील हैंडलूम पर डिजाइनर बनारसी साड़ियों की बुनाई करते हैं। उन्हें एक साड़ी की बुनाई के लिए गृहस्त से दो हजार रुपये मिलते हैं। गृहस्त वह है, जो बुनकरों को साड़ियों की बुनाई के लिए रेशम और अन्य जरूरी सामानों के साथ मजदूरी देता है। साड़ी तैयार होने पर वह उसे लेकर बाजार में या ग्राहक को बाजार दर पर बेंच देता है।

शकील बताते हैं कि 'हर दिन करीब 12 घंटे काम करने पर आठ दिनों में हैंडलूम पर एक साड़ी तैयार हो पाती है। इसे देने पर गृहस्त से मुझे दो हजार रुपये मिलते हैं। औसतन हर दिन ढाई सौ रुपये। इतने में इस समय खर्च चलाना मुश्किल हो रहा है। अगर बीमार हो गए तो समस्या और बढ़ जाती है। इलाज के लिए लोगों से उधार लेना पड़ता है, जिसे समय से चुकाना संभव नहीं हो पाता है।

शकील क्षय रोग (टीबी) से पीड़ित हैं। चौकाघाट निवासी एक निजी चिकित्सक से अपना इलाज करा रहे हैं। उनके इलाज पर हर सप्ताह करीब 1500 रुपये का खर्च आ रहा है। उनके परिवार में उनकी पत्नी शबनम बीवी के अलावा चार बच्चे भी हैं। उनके तीन बच्चे मोहम्मद शाहिद (10 साल), आफरीन (8 साल) और आरिफ (6 साल) पास के मदरसे में पढ़ते हैं। उनका सबसे छोटा बेटा अभी तीन साल का है, जो पढ़ने नहीं जाता है। सभी के खर्च की जिम्मेदारी शकील पर ही है।

इसलिए वह टीबी जैसी जानलेवा बीमारी से पीड़ित होने के बावजूद काम करने को मजबूर हैं। जब उनसे टीबी रोगियों के इलाज के लिए सरकार द्वारा संचालित डॉट्स सेंटर से इलाज नहीं कराने के बारे में पूछा गया तो वह खामोश रहे। उन्होंने इसके बारे में जानकारी नहीं होने की बात कही। बता दें कि विश्व स्वास्थ्य संगठन के सहयोग से भारत सरकार एवं राज्य सरकारें देश में टीबी रोगियों के इलाज के लिए डॉट्स सेंटर संचालित करती हैं। बलगम जांच में टीबी की पुष्टि होने पर डॉट्स सेंटर से दवाएं मुफ्त मिलती हैं, जिन्हें प्रशिक्षित स्वास्थ्य कर्मी की देखरेख में मरीज को खाना पड़ता है।

शकील के दो भाई भी हैं, जो हैंडलूम पर ही बनारसी साड़ियों की बुनाई करते हैं। पैतृक मकान के एक बड़े कमरे (कारखाने) में तीनों भाइयों का एक-एक हैंडलूम है। बुनकर कार्ड के बाबत शकील बताते हैं कि उनका और उनके भाइयों का बुनकर कार्ड नहीं बना है। वे कहते हैं, 'मेरा और मेरे भाइयों में से किसी का भी कोई बुनकर कार्ड नहीं है। शायद अब्बा (पिता) का बना हो। उसके बारे में भी हमें जानकारी नहीं है।'

हालांकि तीनों भाई अपने अब्बा के पुश्तैनी कार्य बुनकरी को आज भी जिंदा रखे हुए हैं, जो बनारस के शहरी इलाकों में इक्का-दुक्का ही मौजूद हैं। बनारसी बुनकरों के इलाकों में अब हैंडलूम की जगह पॉवरलूम ने ले ली है। हालांकि पॉवरलूम पर बुनाई करने के बाद भी बुनकरों की मजदूरी में कोई खास इजाफा नहीं हुआ है। आज भी वह मुश्किल से 250-300 रुपये की दिहाड़ी ही कमाने के लिए मजबूर हैं।

दोषीपुरा क्षेत्र के काजी सादुल्लापुरा स्थित एक कारखाने में पॉवरलूम पर बनारसी साड़ी की बुनाई करने वाले पच्चीस वर्षीय हसन बताते हैं, 'डिजाइनर बनारसी साड़ी की बुनाई करने पर मुझे 10 रुपये प्रति मीटर की दर से मजदूरी मिलती है। मैं हर दिन 12 घंटे मशीन चलाता हूं तो एक पॉवरलूम मशीन से एक दिन में एक थान (करीब 20 मीटर) बनारसी साड़ी तैयार हो जाती है। इस तरह मैं एक दिन में औसतन 200 रुपये ही कमा पाता हूं। वहीं प्लेन बनारसी साड़ी की बुनाई पर पांच रुपये प्रति मीटर की दर से ही मजदूरी मिलती है।'

हसन ने यह भी बताया कि जब प्लेन बनारसी साड़ी की बुनाई करते हैं तो हम एक दिन में एक पॉवरलूम मशीन पर 12 घंटे काम करने के बाद औसतन 25 मीटर ही साड़ी तैयार कर पाते हैं। कुल मिलाकर एक मशीन से एक दिन में कुल 125 रुपये की कमाई ही हो पाती है। इसलिए हम लोग एक साथ दो से तीन मशीनों पर काम करते हैं। फिर भी महीने में औसतन 8 हजार से 10 हजार रुपये ही कमा पाते हैं। जब हसन से बुनकर कार्ड के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि उनका किसी प्रकार का बुनकर कार्ड नहीं बना है। वह यहां मजदूरी करते हैं।

काजी सादुल्लापुरा स्थित एक अन्य कारखाने में दुपट्टे की बुनाई करने वाले सैंतीस वर्षीय अबुल कासिम बताते हैं, 'मुझे पॉवरलूम मालिक से 12 रुपये प्रति मीटर की दर से मजदूरी मिलती है। एक दुपट्टा 2.30 मीटर का होता है। एक मशीन से एक दिन में औसतन 10 दुपट्टे तैयार हो जाते हैं। मैं दो मशीनें चलाता हूं। इस तरह हर दिन करीब 12 घंटा काम करने पर 200-250 रुपये की कमाई कर लेता हूं।' अबुल कासिम के परिवार में उनकी पत्नी के अलावा तीन बच्चे भी हैं। सभी के खर्च की जिम्मेदारी उन पर ही है। उनका सबसे बड़ा लड़का शाहिद अब्बास चौथी कक्षा में पढ़ता है। छोटा लड़का नाजिम अब्बास दूसरी कक्षा में हैं। दो साल की बेटी रिदा फातिमा भी है। पांच सदस्यों के परिवार की जिम्मेदारी निभा रहे अबुल कासिम का भी बुनकर कार्ड नहीं बना है और न ही बुनकरों के लिए संचालित सरकार की किसी भी योजना का लाभ उन्हें या उनके परिवार को मिल रहा है।

कुछ ऐसा ही हाल शेरवानी के कपड़े की बुनाई करने वाले तीस वर्षीय असगर अली का है। हालांकि उनकी आमदनी बनारसी साड़ियों और अन्य कपड़ों की बुनाई करने वाले मजदूरों से कुछ अच्छी है। वह बताते हैं, 'मुझे 10 रुपये प्रति मीटर की दर से मजदूरी मिलती है। एक घंटे में दो मीटर शेरवानी का कपड़ा तैयार हो जाता है। मैं हर दिन औसतन 15 घंटे काम करता हूं। औसतन हर दिन 300 रुपये का काम कर लेता हूं।'

पठानी टोला स्थित एक कारखाने में पॉवरलूम मशीन चलाकर सूती कपड़ा तैयार करने वाले चालीस वर्षीय बुनकर पवन कुमार असगर अली की तरह खुशकिस्मत नहीं हैं। उनकी मानें तो वह हर सप्ताह औसतन 1500 रुपये का ही काम कर पाते हैं। उनके परिवार में उनकी पत्नी के अलावा उनका चार साल का बेटा भी है। वह बताते हैं, 'महंगाई के इस दौर में दो सौ रुपये की कमाई से घर चलाना मुश्किल हो रहा है। 12-12 घंटे काम करने के बाद भी आमदनी में इजाफा नहीं हो पा रहा है। अब बिजली का बिल यूनिट की दर से भुगतान करना पड़ेगा तो मालिक हम लोगों की मजदूरी भी कम कर सकते हैं। सरकार को पहले की तरह ही मजदूरों से फ्लैट रेट पर बिजली का बिल लेना चाहिए।' पॉवरलूम मशीन पर तानी लगाने वाले 42 वर्षीय कमरुद्दीन अंसारी का दर्द इन लोगों से और भी गहरा है। वह बताते हैं, 'मुझे पॉवरलूम मालिक से एक मशीन की तानी लगाने पर 250 रुपये मिलते हैं। मुझे हर दिन तानी लगाने का काम नहीं मिल पाता है। सप्ताह में तीन से चार तानी लगाने का काम ही मुश्किल से मिल पा रहा है। ऐसे में कोई परिवार का खर्च कैसे चलाएगा? लॉक-डाउन में मुर्री बंद थी। काम नहीं मिल रहा था। आज भी सारी मशीने नहीं चल रही हैं। समझ में नहीं आ रहा है कि हम क्या करें।'

पठानी टोला में ही सूती कपड़े का थान तैयार करने वाले एक कारखाने में सरैया निवासी पैंतीस वर्षीय बुनकर वसीम मिले। वह बताते हैं, 'मैं हर दिन आठ से 10 घंटे तीन मशीनें चलाता हूं। एक मशीन से एक सप्ताह में एक थान (100 मीटर) कपड़ा उतरता है। एक थान पर मुझे 700 रुपये की दर से 2100 रुपये मिल जाते हैं। औसतन हर दिन 300 रुपये की कमाई हो जाती है।' वसीम बताते हैं कि उनका भी बुनकर कार्ड नहीं बना है और न ही सरकार की ओर से बुनकरों के लिए संचालित किसी भी प्रकार की योजना का लाभ उन्हें या उनके परिवार को मिलता है। वसीम के परिवार में उनकी पत्नी के अलावा तीन बच्चे हैं। उनका सबसे बड़ा लड़का दस साल का है, जबकि सबसे छोटी लड़की दो साल की है। सभी के खर्च की जिम्मेदारी उन पर ही है। इस कारखाने में हमारी मुलाकात 20 साल के सैफ, 17 साल के रहमत और 20 साल के दानिश से भी हुई। तीनों यहां तीन-तीन पॉवरलूम मशीन चलाकर थान का कपड़ा बना रहे थे। सभी का कहना था कि वे हर दिन औसतन 250-300 रुपये की ही कमाई कर पाते हैं।

थान का सूती कपड़ा तैयार करने वाले इस कारखाने में कुल 20 पॉवरलूम मशीनें लगी हैं। इन मशीनों पर चार भाइयों का मालिकाना हक है। कारखाना मालिकों में से एक मोहम्मद यासीन अंसारी ने बताया कि वे गृहस्त से बानी (कपड़ा तैयार करने का सामान) लाते हैं और कपड़ा तैयार करके उन्हें दे देते हैं। वह बताते हैं, 'हमें गृहस्त से 10 रुपये प्रति मीटर की दर से मजदूरी मिलती है। इसी में से हम अपने यहां काम करने वाले लोगों (बुनकरों) को मजदूरी देते हैं। अब सरकार बिजली का बिल फ्लैट रेट की जगह यूनिट के आधार पर भेज रही है। हम लोग हर महीने हजारों रुपये का बिल कहां से जमा कर पाएंगे।' साठ वर्षीय कारखाना मालिक यासीन आगे कहते हैं, 'एक पॉवरलूम मशीन लगाने पर करीब एक लाख रुपये का खर्च आता है। लाखों रुपये कर्ज लेकर हमने मशीनें बैठाई हैं। लॉकडाउन में मशीनें बंद रहीं। पहले से ही बुनकरी उद्योग समस्याओं को झेल रहा है। अब अचानक हम लोग हजारों रुपये का बिल कहां से दे पाएंगे?' पॉवरलूम बुनकर कार्ड के बाबत पूछने पर वह बताते हैं कि उनका और उनके भाइयों का कार्ड बना है, लेकिन उनके बेटों का नहीं बना है। उनका हथकरघा बुनकर का कार्ड पहले बना था, वही अभी भी है।

उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार ने वर्ष 2006 से बुनकरों को फ्लैट रेट पर मिलने वाली विद्युत आपूर्ति योजना में बदलाव कर दिया है। पिछले दिसंबर में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में हुई मंत्रिपरिषद की बैठक में बुनकरों से प्रति यूनिट की दर से बिजली बिल वसूलने का निर्णय लिया गया था। इसमें तय हुआ था कि प्रत्येक छोटे पॉवरलूम (0.5 अश्वशक्ति तक) को प्रतिमाह 120 यूनिट तथा बड़े पॉवरलूम (एक अश्वशक्ति तक) को प्रतिमाह 240 यूनिट तक 3.50 रुपये प्रति यूनिट की दर से सब्सिडी दी जाएगी। इसके पीछे तर्क दिया गया था कि पॉवरलूम बुनकर कार्ड योजना के तहत बुनकरों को मिलने वाले फ्लैट रेट का लाभ अन्य उपभोक्ता उठा रहे हैं जिससे सरकार को हर साल करोड़ों रुपये का नुकसान हो रहा है। पॉवर कॉर्पोरेशन ने भी सरकार के निर्देशानुसार फरवरी से प्रति यूनिट की दर से बिजली का भुगतान पॉवरलूम मालिकों से वसूलना शुरू कर दिया। इसे लेकर बनारसी बुनकरों में काफी गुस्सा है। वे पूर्ववर्ती फ्लैट रेट पर बिजली का बिल लेने की मांग सरकार से कर रहे हैं। ❑

तीन कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों का बेमियादी आंदोलन

तीन काले कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों का देशव्यापी आंदोलन केंद्र की मोदी सरकार की पूरी कोशिशों के बावजूद नहीं थम सका है। दिल्ली में न घुसने देने की हरसंभव कोशिश को किसानों के बड़े समूह ने नाकाम कर दिया है और कई लाख किसान दिल्ली बार्डर पर मौजूद हैं। किसानों के दबाव में आई सरकार ने अब उनके दिल्ली में घुसने का रास्ता साफ कर दिया है। दरअसल सरकार ने किसानों को निरंकारी मैदान में आंदोलन करने की जगह देने की पेशकश की है, लेकिन किसानों की तरफ से अभी इस पर कोई फैसला नहीं हो सका है। इस बीच उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब और हरियाणा से किसानों के कई और जत्थे रवाना होने की खबर है। किसान अपनी इस लड़ाई को फैसलाकुन अंजाम तक पहुंचाने की ठान कर निकले हैं। यही वजह है कि तमाम किसान परिवार समेत यहां आए हैं और साथ में कई हफ्ते का राशन भी लाए हैं।

अखिल भारतीय किसान संघर्ष समन्वय समिति (एआईकेएससीसी) के आह्वान पर देश के 500 से ज्यादा किसान संगठनों ने 26-27 नवंबर को दिल्ली कूच का एलान किया था। किसानों को दिल्ली पहुंचने से रोकने के लिए केंद्र की मोदी सरकार ने 25 नवंबर की रात से ही हरियाणा में किसान नेताओं को हिरासत में लेना शुरू कर दिया था। इसके बावजूद हरियाणा, पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश से किसानों के जत्थे दिल्ली की तरफ बढ़ रहे हैं। यह किसान ट्रैक्टर-ट्राली लेकर दिल्ली के लिए निकले हैं।

इन्हें रोकने के लिए केंद्र सरकार ने भारी पुलिस फोर्स तैनात की थी। पुलिस फोर्स ने कई जगहों पर किसानों पर लाठीचार्ज ही नहीं किया, बल्कि उन्हें रोकने के लिए आंसू गैस के गोले भी छोड़े। सत्ता के नशे में चूर सरकार की ज्यादती का अंत यहीं नहीं था। सर्दी भरी रात में किसानों पर ठंडे पानी की बौछार तक की गई। इसके बावजूद किसान बिना हिंसा का सहारा लिए डटे हुए हैं।

किसानों के जत्थों को रोकने के लिए पुलिस ने जगह-जगह युद्ध जैसी तैयारी कर रखी थी। सड़क पर न सिर्फ बड़े-बड़े गड्ढे खोद दिए गए, बल्कि कंटीले तार भी लगाए गए हैं। इसके बावजूद किसान तमाम बैरिकेड और अवरोध पार करते हुए दिल्ली बार्डर तक पहुंचने में कामयाब हो गए हैं। मोदी सरकार ने दिल्ली की केजरीवाल सरकार से नौ स्टेडियम मांगे थे, ताकि किसानों को गिरफ्तार करके उनमें रखा जा सके, लेकिन दिल्ली सरकार ने किसानों के आंदोलन का समर्थन करते हुए स्टेडियम देने से साफ मना कर दिया। इस बीच किसानों के भारी दबाव को देखते हुए केंद्र सरकार ने निरंकारी मैदान में आंदोलन के लिए जगह देने की पेशकश की है।

एआईकेएससीसी के सदस्य पुरुषोत्तम शर्मा ने बताया, 'योंगेंद्र यादव और वीएम सिंह को लेकर भ्रामक प्रचार किया जा रहा है। सिंधू बार्डर पर किसानों और पुलिस फोर्स से तनातनी के बीच दोनों नेता कृषकों को समझाने पहुंचे थे। उसके बाद मामला शांत हो गया था।' हालांकि दोनों लोगों के पुलिस की गाड़ी से जाने पर सवाल उठाए जा रहे हैं।

यह देश का सबसे बड़ा किसान आंदोलन बनने जा रहा है। दो दिन का 'दिल्ली चलो' आह्वान अब एक बड़े आंदोलन की तरफ बढ़ रहा है। उत्तराखंड से भी किसानों का जत्था आंदोलन में शामिल होने के लिए रवाना हो गया है। इसके अलावा यूपी में की गई नाकेबंदी किसानों के भारी दबाव की वजह से हटा ली गई है। यहां से भी बड़ी संख्या में किसान दिल्ली की तरफ कूच कर रहे हैं। भारी संख्या में पंजाब और हरियाणा के किसानों के जत्थे विभिन्न मार्गों से दिल्ली की ओर कूच कर रहे हैं। पुलिस द्वारा सड़कों पर खड़े अवरोधों को हटाने के लिए हरियाणा के किसान भी जगह-जगह खोदी गई सड़कों के गड्ढे भर रहे हैं, ताकि किसानों के जत्थे दिल्ली की ओर जा सकें।

पंजाब और दिल्ली से सटे हरियाणा के सील किए गए बार्डरों पर लाखों किसानों का जमावड़ा बढ़ता जा रहा है। हरियाणा के बार्डर पर रोके गए किसान जत्थे 3 दिसंबर तक केंद्र सरकार से वार्ता तक वहीं जमे रहेंगे। उत्तर प्रदेश के बार्डर से भी किसानों के जत्थों को रोक रखा गया था। देश भर में किसान संगठन सभी जिला, तहसील और ब्लॉक कार्यालयों पर भी धरना प्रदर्शन कर रहे हैं। इन कार्यक्रमों में भी लाखों किसान हिस्सा ले रहे हैं। भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) ने यूपी सहित कई राज्यों में सड़कें जाम करने की घोषणा की है।

किसान समूहों ने कृषि मंत्री द्वारा 3 दिसंबर को किसानों से वार्ता करने की बात छेड़ने की कड़ी निंदा की है। नेताओं ने कहा कि केंद्र सरकार के पास किसानों से चर्चा करने के लिए कुछ तय मसला ही नहीं है। किसान अपने एजेंडे के बारे में बहुत स्पष्ट हैं कि खेती के तीनों काले कानून और बिजली बिल 2020 रद्द होने चाहिए। अगर केंद्र सरकार का इस पर कोई पक्ष है तो उसे घोषित करना चाहिए। अगर पक्ष नहीं है तो वार्ता की बात करके भ्रम नहीं फैलाना चाहिए।

इस बीच पश्चिमी उप्र के हापुड़ में दिल्ली-मुरादाबाद मार्ग पर बागड़पुर चेक पोस्ट और मुजफ्फरनगर, संभल रामपुर आदि इलाकों में भी कई बड़े प्रदर्शन हुए हैं। रामपुर में किसानों को दिल्ली की ओर चलने से रोक दिया गया है और आगे बढ़ने की अनुमति के लिए किसानों का लगातार दबाव जारी है। उप्र के अन्य जिलों से भी भारी संख्या में कल तक किसानों के जत्थे चलने की उम्मीद है। उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिला मुख्यालय पर अखिल भारतीय किसान महासभा के राष्ट्रीय सचिव ईश्वरी प्रसाद कुशवाहा के नेतृत्व में किसानों ने प्रदर्शन किया। सुलतानपुर, सीतापुर, इलाहाबाद समेत कई जिलों से भी किसानों के प्रदर्शनों की खबरें हैं।

पश्चिम बंगाल, झारखण्ड, असम, त्रिपुरा, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखण्ड, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गुजरात और कर्नाटक समेत सभी राज्यों में बड़े पैमाने पर किसानों के सड़कों पर उतरने की खबरें हैं। इस आंदोलन में किसानों के साझे मोर्चे में शामिल 500 संगठनों के अलावा भी कई अन्य संगठनों की सक्रिय भागीदारी है। ❑

नोटबंदी के बाद शिशु मृत्यु दर में बढ़ोत्तरी

❑ सुशील मानव

नोटबंदी के बाद नवजात बच्चों की मौत की वो घटनाएं, जो ख़बरों का हिस्सा नहीं बन सकीं, उन्हें आंकड़ों का हिस्सा बनाकर ले आए हैं अर्थशास्त्री ज्यां द्रेज और उनके टीम मेंबर। अर्थशास्त्री ज्यां द्रेज, आशीष गुप्ता, अंकित पराशर और कनिका शर्मा द्वारा किए गए एक अध्ययन में ये निकलकर आया है कि भारत द्वारा शिशु मृत्य दर कम करने के प्रयासों को नोटबंदी से करारा झटका लगा। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि शिशु मृत्यु दर में गिरावट की वार्षिक दर जो साल 2005-2016 के बीच 4.8 प्रतिशत थी, वह साल 2017 में गिरकर 2.9 प्रतिशत और साल 2018 में गिरकर 3.1 प्रतिशत हो गई।

इस अध्ययन के लिए सैंपल रजिस्ट्रेशन सिस्टम डेटा का इस्तेमाल किया गया है। स्टडी डेटा में कहा गया है कि साल 2017 और 2018 में कुछ राज्यों में कमी आई है और कुछ राज्यों में शिशु मृत्यु दर में बढ़ोत्तरी देखी गई है। अध्ययन के मुताबिक साल 2017 में 20 में से आठ राज्यों में शिशु मृत्यु दर में गिरावट में गड़बड़ी आई, जिसके लिए एसआरएस के तहत डेटा दर्ज किया गया है। वहीं साल 2018 में, छह राज्यों में गड़बड़ देखी गई, जिसमें छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश शामिल थे, जहां आईएमआर में वृद्धि हुई थी। रिसर्च पेपर में रेखांकित किया गया है कि छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में, पहले के दो सालों की अपेक्षा साल 2018 में शिशु मृत्यु दर अधिक दर्ज की गई।

ग्रामीण क्षेत्रों (20 राज्यों में से 9) की तुलना में शहरी क्षेत्रों (20 राज्यों में से 15) में अधिक सामान्य था। अध्ययन में कहा गया है कि साल 2017 या 2018 में कुल मिलाकर 56.4% राज्यों में शिशु मृत्यु दर गिरावट में गड़बड़ी दर्ज की गई है। रिपोर्ट के लेखकों का कहना है कि शिशु मृत्यु दर की गिरावट में गड़बड़ी के लिए विमुद्रीकरण एक मुख्य कारण है।

रिपोर्ट के सह-लेखक आशीष गुप्ता के मुताबिक, 'शिशु मृत्यु दर पर प्रभाव को महसूस करने में ग्रामीण क्षेत्रों को अधिक समय इसलिए लगा क्योंकि ग्रामीण अर्थव्यवस्था नकदी पर कम निर्भर है तथा स्वच्छ ईंधन और शौचालय तक ग्रामीणों की पहुंच में सुधार के लिए कार्यक्रम मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में निर्देशित किए गए थे। संभावना है कि इन कार्यक्रमों के बिना, शिशु मृत्यु दर में वृद्धि अधिक रही होगी।' साल 1971 में अपने पहले जन्मदिन पर पहुंचने से पहले हर 1,000 शिशुओं में से 129 की मृत्यु हो गई जबकि साल 2011 तक, इसमें एक चौथाई तक गिरावट दर्ज की गई और प्रति 1,000 जीवित शिशुओं में से 44 बच्चों की मृत्यु पैदा होने के पहले साल में हुई।

ज्यां द्रेज के अध्ययन में यह भी कहा गया है कि इस साल कोविड-19 महामारी और राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन से शिशु मृत्यु दर घटाने के प्रयासों को और बड़ा झटका लग सकता है, क्योंकि तमाम स्वास्थ्य सेवाओं जैसे कि प्रसवपूर्व देखभाल और बच्चों के टीकाकरण अभियान में कोविड-19 से बड़ा व्यवधान आया है। वहीं यूनिसेफ का कहना है कि कोविड-19, भूख और गरीबी का स्वास्थ्य सेवाओं के वितरण पर असर पड़ेगा और इसके असर से तमाम स्वास्थ्य योजनाओं में देरी की आशंका है। यूनिसेफ का अनुमान है कि कोविड-19 के चलते दुनिया भर में अतिरिक्त 6.7 मिलियन कमज़ोर बच्चों का जन्म होगा। दुर्बलता को शिशु मृत्यु दर के एक कारक के तौर पर देखा जाता है, यूनिसेफ का अनुमान है कि विश्व स्तर पर प्रति माह अतिरिक्त 10,000 बच्चों की मृत्यु होगी।

यूनिसेफ के मुताबिक 69,944 बच्चे नये साल (1 जनवरी) के दिन पैदा होंगे, जबकि वैश्विक स्तर पर 3,95,072 बच्चे पूरे विश्व में अतिरिक्त पैदा होंगे। यूनिसेफ के मुताबिक इनमें से आधे बच्चे केवल सात देशों में पैदा होंगे, जिसमें भारत (44,940), चीन (44,940), नाइजीरिया (25,685), पाकिस्तान (15,112), इंडोनेशिया (13,256), यूएस (11,086), कांगो (10,053), और बंग्लादेश (8,428) शामिल हैं।

साल 2019 में जन्म लेने के पहले महीने के भीतर वायु प्रदूषण से भारत में लगभग 116,000 शिशुओं की मृत्यु हुई है। ऐसा दुनिया भर में स्वास्थ्य पर वायु प्रदूषण के प्रभाव पर एक नये वैश्विक अध्ययन में निकलकर आया है। स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर 2020 नामक वैश्विक रिपोर्ट में ये बात सामने आई है कि इनमें से आधे से ज्यादा बच्चों की मौत पीएम 2.5 से जुड़े वायु प्रदूषण कारकों से जुड़ी है। इनमें खाना पकाने का ईंधन, लकड़ी का कोयला, लकड़ी और गोबर जैसे ईंधन का मुख्य योगदान रहा है। इससे उत्पन्न वायु प्रदूषण की वजह से ज्यादा बच्चों की मौत हुई। वायु प्रदूषण की वजह से जान गंवाने वाले बच्चों में ये पाया गया कि या तो जन्म के बाद उनका वजन क़ाफी कम था या फिर बच्चों का प्रिमेच्योर जन्म हुआ था।

भारत में 2019 में बाहरी और घरेलू वायु प्रदूषण के लंबे समय के प्रभाव के कारण स्ट्रोक, दिल का दौरा, डायबिटीज, फेफड़े का कैंसर, फेफड़ों की पुरानी बीमारियों और नवजात रोगों से 16.7 लाख मौतें हुईं। नवजात शिशुओं में ज्यादातर मौतें जन्म के समय कम वजन और समय से पहले जन्म से संबंधित जटिलताओं से हुईं। रिपोर्ट के मुताबिक वायु प्रदूषण अब दूसरों के बीच मृत्यु का सबसे बड़ा खतरा है। यह रिपोर्ट अक्तूबर 2020 में हेल्थ इफेक्ट्स इंस्टीट्यूट द्वारा प्रकाशित की गई है। यह स्वतंत्र, गैर-लाभकारी अनुसंधान संस्थान है और अमेरिकी पर्यावरण संरक्षण एजेंसी और अन्य द्वारा वित्त पोषित है।

जानकारी के मुताबिक, ये अध्ययन कोरोना महामारी के वक्त इसलिए किया गया, क्योंकि कोविड भी दिल और फेफड़ों को प्रभावित करने वाली बीमारी है। इसी वजह से बड़ी संख्या में लोग मारे गए हैं। भारत में कोविड की वजह से अब तक 1 लाख 30 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, कोरोना से मरने वाले अधिकांश लोग पहले से ही फेफड़ों या दिल संबंधी बीमारी से पीड़ित थे, जिसकी वजह कहीं न कहीं वायु प्रदूषण था। वायु प्रदूषण से होने वाली बीमारियों का कोविड-19 से गहरा संबंध है। ❑

बीपीसीएल

सोने का अंडा देने वाली एक और मुर्गी जिबह के लिए तैयार

❑ गिरीश मालवीय

मोदी सरकार ने हर साल सोने का अंडा देने वाली एक और मुर्गी जिबह कर दी। बीपीसीएल के निजीकरण के लिए सरकार ने बोलियां आमंत्रित की थीं। जैसी कि उम्मीद की जा रही थी कि इसका अधिग्रहण रिलायंस इंडस्ट्रीज करेगी, वैसा नहीं हुआ। रिलायंस भारत पेट्रालियम कॉरपोरेशन लिमिटेड की बिक्री के लिए लगी प्रारंभिक बोली में शामिल नहीं हुई है। शायद वह किसी दूसरी कंपनी के मार्फत इसे हथियाना चाह रही है। सरकार ने भी बिड लगाने वाली कंपनियों के नाम डिस्क्लोज नहीं किए हैं।

रिलायंस ने अभी तक बीपीसीएल को लेकर अपने इरादों पर चुप्पी बनाए रखी है। रिलायंस ने हाल में बीपीसीएल के पूर्व अध्यक्ष सार्थक बेहुरिया को कंपनी में बड़े पद पर नियुक्त किया था और कुछ हफ्ते पहले इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन (आईओसी) के पूर्व चेयरमैन संजीव सिंह को भी नियुक्त किया था।

बीपीसीएल को बेचना गलत है। यह सरकार के लिए लाभ कमाने वाली देश की सबसे सक्षम कंपनी है और पिछले पांच साल से यह सालाना 8 से 10 हजार करोड़ रुपये लाभांश दे रही थी। वित्त वर्ष 2018-19 में बीपीसीएल को 7,132 करोड़ रुपये का मुनाफा हुआ था।

भारत के पेट्रोलियम सेक्टर में बीपीसीएल बड़ा नाम है। सार्वजनिक क्षेत्र की तेल कंपनियों में बीपीसीएल सबसे पेशेवर ढंग से चलने वाली कंपनी है। अगर कच्चे तेल यानी क्रूड ऑयल की रिफाइनिंग की बात करें तो बीपीसीएल देश में करीब 13 फ़ीसदी तेल रिफाइन करता है। यानी हर साल करीब 33 मिलियन मीट्रिक टन। तकरीबन 15000 फ्यूलिंग स्टेशन हैं और 6000 डिस्टीब्यूटर्स। घर में इस्तेमाल होने वाली गैस से लेकर प्लेन के फ्यूल तक बीपीसीएल सब बनाती है।

अधिग्रहण करने की दौड़ में शामिल कंपनियों के लिए सबसे बड़ा आकर्षण ईंधन बिक्री का खुदरा नेटवर्क है। इस बाजार में बीपीसीएल की हिस्सेदारी 22 प्रतिशत है। एक सूत्र ने कहा कि कंपनी की रिफाइनरियों के पास विस्तार की जगह नहीं है। विशेष रूप से मुंबई और कोच्चि में यह स्थिति है। इन रिफाइनरियों के विस्तार या पेट्रो रसायन इकाई के विस्तार के लिए जमीन पाना लगभग असंभव है, इसलिए बोली लगाने के लिए कंपनियों के सामने बेहद लाभदायक अवसर है, लेकिन कोरोना काल की वजह से देशी-विदेशी कंपनियां इसमें कम रुचि दिखा रही हैं।

एनडीए सरकार की बीपीसीएल को बेचने की यह पहली कोशिश नहीं है। 2003 में अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में भी ऐसी कोशिश हुई थी। तब सरकार 34.1 फीसदी हिस्सा बेच रही थी, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी थी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि सरकार बिना कानून में ज़रूरी बदलाव किए बीपीसीएल को नहीं बेच सकती, लेकिन अब ऐसी कोई बंदिश नहीं रही। संसद की अनुमति लेने का प्रावधान 2016 में कानून बदलने के साथ ही ख़त्म हो गया।

सरकार के बीपीसीएल के विनिवेश के फैसले को लेकर उसके कर्मचारी आश्चर्यचकित हैं। वे कहते हैं कि इसे प्राइवेटाइज करना सोने की चिड़िया को मारने जैसा होगा और इससे इकॉनामी, सरकार के सामाजिक कल्याण कार्यक्रम और एनर्जी सिक्योरिटी को नुकसान पहुंचेगा।

विनिवेश का आधार यह होता रहा है कि जो सरकारी उपक्रम लगातार नुकसान में चल रहे हैं, उन्हें बेच दिया जाएगा, लेकिन यहां तो प्रॉफिट मेकिंग कंपनी को ही बेचा जा रहा है। दरअसल, नोटबंदी और जीएसटी के बाद सरकार की राजस्व हानि में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है। इसे काबू करने के लिए सरकार ने सरकारी संपत्तियों को बेचने पर अपना ध्यान बढ़ा दिया है।

बांबे स्टॉक एक्सचेंज में कंपनी का शेयर प्राइस 412.70 रुपये के बंद भाव पर बीपीसीएल में सरकार की 52.98 फीसदी की हिस्सेदारी के आधार पर 47,430 करोड़ रुपये का है। वहीं खरीदार को जनता से 26 फीसदी खरीदने के लिए खुली पेशकश करनी होगी, जिसकी लागत 23,276 करोड़ रुपये आंकी गई है। यानी कंपनी की कुल कीमत के लिए करीब 70 हजार करोड़ रुपये चुकाने होंगे, जो कंपनी की वास्तविक वैल्यू से काफी कम है।

बीपीसीएल की कर्मचारी यूनियन का कहना है, 'बीपीसीएल की संपत्ति के व्यापक मूल्यांकन से पता चलता है कि कंपनी का सही मूल्यांकन तकरीबन 9 लाख करोड़ रुपये होगा। सामान्य तौर पर प्रबंधन नियंत्रण बाजार पूंजीकरण के ऊपर 30 से 40 प्रतिशत प्रीमियम के साथ दिया जाता है। अगर 100 प्रतिशत से अधिक प्रीमियम भी कंपनी को मिलता है, तो भी 4.46 लाख करोड़ रुपये की संपत्ति का नुकसान हो सकता है।'

कोरोना काल की वजह से भी इसकी कीमत बेहद कम मिल रही है। इसके बावजूद भी मोदी सरकार प्राइवेट कंपनियों को फायदा पहुंचाने के लिए बेहद कम कीमत पर इसे बेच रही है।

ओबामा की किताब से भी मुद्दा आखिर तलाश ही लिया गया!

❑ श्रवण गर्ग

राहुल गांधी के आलोचक ऐसा कोई मौक़ा नहीं छोड़ते कि कैसे कांग्रेस के इस आक्रामक नेता को विवादों के घेरे में लाया जा सके ! कुछेक बार तो राहुल स्वयं ही आगे होकर अवसर उपलब्ध करा देते हैं (जैसे अपनी ही सरकार के फ़ैसलों से सम्बंधित कागज़ों को सार्वजनिक रूप से फाड़ना) पर अधिकांशतः आलोचक ही मौक़ों को अपनी राजनीतिक निष्ठाओं के हिसाब से तलाश और तराश लेते हैं। राहुल को लेकर ताज़ा विवाद अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा की हाल में प्रकाशित एक किताब को लेकर उत्पन्न हुआ है।अंग्रेज़ी में लिखी गई 979 पृष्ठों की किताब 'A Promised Land' का हिंदी (और गुजराती !) में अनुवाद होकर प्रकाशित होना बाक़ी है। किताब में राहुल गांधी को लेकर कुल जमा छह पंक्तियाँ हैं। ऐसा लगता है कि देश भर में संगठित रूप से फैले राहुल के आलोचकों की 'जमात' ने हज़ार पन्नों की अंग्रेज़ी किताब को पूरा पढ़ भी लिया और अपने मतलब के अर्थ भी निकाल लिए जो इस समय चर्चा में हैं।

ओबामा की किताब को लेकर उठे विवाद के कारण ज़रूरी हो गया है कि अमेरिकी राष्ट्रपतियों द्वारा समय-समय पर भारतीय नेताओं के बारे में की जाने वाली टिप्पणियों से इस संवाद की शुरुआत की जाए। कोई पचास साल पहले जब इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री थीं और अटल बिहारी जैसे महान नेता विपक्ष में थे, अमेरिका में डॉनल्ड ट्रम्प की ही रिपब्लिकन पार्टी के नेता रिचर्ड निक्सन राष्ट्रपति और हेनरी किसिंजर उनके विदेश मंत्री और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार थे। दोनों ही इंदिरा गांधी से भरपूर नफ़रत करते थे। इंदिरा गांधी नवम्बर 1971 में अमेरिका यात्रा पर थीं और उस दौरान उन्हें और भारतीय महिलाओं को लेकर जो अश्लील टिप्पणियाँ निक्सन और किसिंजर ने अपनी आपसी बातचीत के दौरान कीं थीं, वे अब उजागर हो रही हैं। इंदिरा गांधी को लक्षित दोनों के बीच की बातचीत के कुछ क्रूर अनुवाद इस प्रकार से उपलब्ध हैं : 'हिंदुस्तानी औरतें दुनिया में सबसे ज्यादा बदसूरत होती हैं', 'हिंदुस्तानियों को देखकर घृणा होती है', 'हमने उस बूढ़ी चुड़ैल के ऊपर थूक ही दिया', आदि, और भी कई शर्मनाक टिप्पणियाँ ! यह कड़वी सच्चाई इतिहास में अपनी जगह क़ायम है कि मुलाक़ात से पहले निक्सन ने इंदिरा गांधी को कितनी देर इंतज़ार करवाया था।

सवाल यह है कि कुख्यात 'वॉटर गेट' कांड के खुलासे के पश्चात अपमानजनक तरीक़े से पद छोड़ने के बाद अगर निक्सन भी कोई किताब लिखकर मशहूर होना चाहते या उनकी किसिंजर के साथ की गुप्त बातचीत ही तब सार्वजनिक हो जाती तो अटल जी और तब के अन्य विपक्षी नेताओं की क्या प्रतिक्रिया होती ? क्या वे भी इंदिरा जी का आज की तरह ही मज़ाक़ उड़ाते ? हुआ केवल यह है कि पिछले तमाम सालों में अमेरिका की रिपब्लिकन पार्टी तो नहीं बदली पर अटल जी जैसे नेताओं की पार्टियों की राजनीति और उनके प्रतिनिधि ज़रूर बदल गए हैं।

इसे राजनीति के गिरते स्तर और उसकी अगुआई करने वाले नेताओं की देन ही मानना चाहिए कि राहुल गांधी को लेकर अपनी किताब में ओबामा ने जिस आशय की कोई टिप्पणी की ही नहीं, उसे लेकर कांग्रेस के नेता की भद्द पीटी जा रही है। देश को प्रतीक्षा करनी चाहिए कि अंततः व्हाइट हाउस छोड़ने के बाद ट्रम्प अगर अपने कार्यकाल को लेकर कोई किताब लिखने का फैसला लेते हैं तो भारत में अपने 'मित्रों' और अमेरिका में रहने वाले उन अप्रवासी भारतीयों के बारे में क्या टिप्पणी करते हैं, जिनसे टेक्सास प्रांत के ह्यूस्टन में आयोजित 'हाउडी मोदी' रैली में 'अबकी बार ट्रम्प सरकार' के नारे लगवाए गए थे।

बराक ओबामा ने वास्तव में अपनी किताब में ऐसा आशय लिए कुछ नहीं कहा है कि गांधी परिवार या कांग्रेस संगठन को शर्मिंदा होना चाहिए।भारत के लोग अपने दूसरे नेताओं के बारे में भी पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति के 'मन की बात' जानना चाहते हैं, जिनका जिक्र अनजाने में या जान बूझकर किताब के प्रथम भाग में ओबामा ने नहीं किया होगा। ओबामा ने किताब में उस रात्रि भोज का जिक्र किया है, जिसमें सोनिया गांधी और डॉ.मनमोहन सिंह के साथ राहुल भी उपस्थित थे। राहुल को लेकर किताब के जिस वर्णन को प्रचारित किया जा रहा है वह इस प्रकार से है : 'उनमें एक ऐसे नर्वस और अपरिपक्व छात्र के गुण हैं, जिसने अपना होमवर्क किया है और टीचर को इम्प्रेस करने की कोशिश में है लेकिन गहराई से देखें तो योग्यता की कमी है और किसी विषय पर महारत हासिल करने के जुनून का अभाव है।'

अब किताब में वास्तव जो लिखा गया है उसका अनुवादित अंश इस प्रकार है : '...राहुल गांधी के बारे में यह कि वे स्मार्ट और जोशीले नज़र आए। उनका सुदर्शन दिखना उनकी माँ के साथ मेल खाता था।उन्होंने प्रगतिशील राजनीति के भविष्य पर अपने विचार प्रस्तुत किए। बीच-बीच में वे मुझसे मेरी 2008 की चुनावी मुहिम के बारे में भी जानकारी लेते रहे। वे नर्वस और अनाकार भी नज़र आए जैसे कि एक ऐसा छात्र, जिसने अपना होमवर्क कर लिया है और उसे अपने टीचर को बताने को उत्सुक है पर उसके अंदर कहीं या तो विषय पर महारत के कौशल अथवा उसके प्रति अनुराग का अभाव हो।'

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की खूबी यह है कि 2014 में दिल्ली की ज़मीन पर पैर रखते ही उन्होंने अपने गुजरात के सफल प्रयोगों को दोहराते हुए सबसे पहले पार्टी के भीतर के अवरोधों/विरोधों को समाप्त किया।अपने नेतृत्व को लेकर पार्टी के अंदर कोई भी चुनौती नहीं बचने दी। इसके विपरीत, कांग्रेस में सारी चुनौतियाँ अंदर से ही हैं। राहुल गांधी के साथ तो ट्रेजेडी यह है कि कांग्रेस में उनकी राजनीतिक उम्र की शुरुआत ही 2004 के बाद से हुई, पर उन्हें बार-बार यह अहसास दिलाया जाता है कि उनकी उम्र (पचास वर्ष) तक पहुँचने के पहले ओबामा सहित दुनिया की कई हस्तियाँ काफ़ी कुछ हासिल कर चुकीं थीं!

डॉ. मनमोहन सिंह की तारीफ़ों के पुल बांधते हुए ओबामा ने अपनी किताब में लिखा है : 'रात्रि भोज के बाद जब वे पत्नी मिशेल के साथ रवाना हो गए तो सोचते रहे कि उनके (मनमोहन सिंह के) बाद क्या होने वाला है ! क्या भाजपा द्वारा पोषित राष्ट्रवाद के ऊपर कांग्रेस पार्टी के प्रभुत्व को क़ायम रखते हुए सोनिया गांधी द्वारा तय की गई नियति के अनुसार कमान राहुल के हाथों में सौंप दी जाएगी?' उनकी किताब और कांग्रेस में गांधी परिवार, राहुल गांधी और पार्टी के नेतृत्व को लेकर इस समय जो घमासान चल रहा है, उसकी कुछ जानकारी तो ओबामा को भी अवश्य ही होगी ! आश्चर्य नहीं होना चाहिए अगर राहुल का मज़ाक़ उड़ाने वालों में कांग्रेस के वे अंदरूनी लोग भी शामिल हों, जिन्होंने उनके(राहुल के) बाहरी आलोचकों की तरह ही किताब में लिखी गईं कुछ पंक्तियों और भाजपा के राष्ट्रवाद पर ओबामा की चिंता को ईमानदारी से नहीं पढ़ा होगा। ❑

लोक-विमर्श

जीतेंगे तो गांधी ही!

रसूलपुर वालों की स्तुत्य पहलकदमी

❑ डॉ. आर.एस. दूबे

उत्तर प्रदेश के अम्बेडकरनगर जिला अंतर्गत रसूलपुर (खासपुर, तहसील-टांडा) नामक एक गांव है। इस गांव में काफी पहले से ही लोगों में शराब पीने की आदत है। वास्तव में शराब के कारण सबसे अधिक प्रभावित शराब पीने वाले का परिवार ही होता है। फलस्वरूप जहां महिलाओं को कई प्रकार की अनावश्यक उलझनों से जूझना पड़ता है, वहीं बच्चों का भविष्य बहुत चिन्तनीय होता है। यह गांव गांधी-विचारनिष्ठ लोकसेवक एसडीएम सदर, वाराणसी के मदनमोहन वर्मा का है।

एक बैठक के दौरान आदरणीय वर्मा जी से आधुनिक समस्याओं पर विचार-विमर्श हो रहा था कि वर्मा जी ने अपने गांव की व्यथा कही और उन्होंने बताया कि अपने गांव की इस स्थिति को देखकर मैं काफी व्यथित व चिन्तित रहता हूं।

वास्तव में वे अनवरत इस चिन्तन में रहते थे कि आखिर क्या किया जाय कि खुद के गांव से शराब को भगाया जा सके। उनके मन में एक खूबसूरत विचार आया कि गांव में गांधीजी की प्रतिमा स्थापित की जाय और लोगों को गांधी-विचार के बारे में बताया जाय। प्रयोग के तौर पर वर्मा जी ने आज से लगभग डेढ़ साल पहले अपने गांव में अपनी जमीन पर गांधीजी की प्रतिमा की स्थापना करवायी और विधिवत गांव के लोगों को इकट्ठा कर घोषणा कर दी कि यह स्थल पूरी तरह से सार्वजनिक और पूरे गांव का है। वर्मा जी यहीं नहीं रुके। गांव के लोगों को गांधी जी के विचारों से बखूबी अवगत कराया और सामूहिक प्रयास कर शराब को छोड़ने हेतु सभी लोगों को प्रेरित किया।

धीरे-धीरे पूरे गांव में गांधी-विचार की सुगंध फैलने लगी और लोगों को स्वयं लगने लगा कि जिस गांव में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी मौजूद हैं, उस गांव में शराब पीना कदापि शुभ नहीं हो सकता। आवश्यकता पड़ने पर आज भी गांव की महिलाएं अपने-अपने परिवारों में पुरुषों को गांधीजी की बातें याद दिलाने में पीछे नहीं रहतीं हैं। फलस्वरूप रसूलपुर गांव में एक जीवंत चेतना का निर्माण होना प्रारंभ होने लगा और पूरा गांव नशा-मुक्ति की राह पर आगे बढ़ चला।

विगत 19 नवंबर 2020 को वर्मा जी अपने गांव पहुंचे। लोगों से बातचीत करने के दौरान उन्हें पता चला कि गांधी प्रतिमा का यह अनूठा प्रयोग बहुत ही सशक्त और उपयोगी सिद्ध हो रहा है। पिछले डेढ़ वर्षों के अंदर ही गांव में 40 प्रतिशत से अधिक लोगों ने हमेशा के लिए शराब पीना छोड़ दिया है। अपने गांव

के बारे में जब यह सुखद जानकारी वर्मा जी को हुई, तो उन्होंने अपनी खुशी जाहिर की और कहा कि हमारा गांव गांधी जी की प्रेरणा से खुद को शराब से मुक्त घोषित कर रहा है। हमारे गांव के लिए यह गौरव की बात है। इसलिए हम सब अपने गांव के इस गौरव के उपलक्ष्य में 51 किलो लड्डू बंटवाकर सामूहिक रूप से शराब मुक्ति का प्रथम उत्सव मनायेंगे।

सभी के साथ मिलकर उन्होंने तय किया कि 20 नवंबर 2020 को गांव में अलग-अलग सात जगहों पर मिष्ठान्न वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया जाय। तदनुसार गांव के बलभद्र वर्मा (सेवानिवृत्त शिक्षक), साधु चौहान, राममिलन, रामजीत चौहान, इंद्रजीत मिश्रा के घर के पास और शिव मंदिर तथा गांधी-प्रतिमा स्थल को चयनित किया गया और सभी सात जगहों पर एक साथ मिष्ठान्न वितरण का समय सायं 4 बजे रखा गया। निर्धारित समय के अनुसार सभी जगहों पर सायं 4.00 बजे मिष्ठान्न के पैकटों को खोला गया और लोगों में वितरित किया गया।

वर्मा जी के इस छोटे-से प्रयास ने गांव में अनुकूल वातावरण का निर्माण करना शुरू कर दिया है। गांधी जी की प्रतिमा के जरिये नशामुक्ति के इस अभिनव प्रयोग से गांव के लोगों के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है और लोगों के अंदर का क्रोध, अहंकार आदि नकारात्मक भाव कम हो रहा है। उन्होंने ग्रामीणों के सामने एक सवाल चुनौती के रूप में रखा कि इस गांव में गांधी जी जीतेंगे या शराब? ग्रामीणों ने भी मासूमियत से जवाब दिया – अंत में तो गांधीजी ही जीतेंगे।

सही मायने में मदनमोहन वर्मा का यह प्रयास प्रेरणादायी और सुखद है। गांव से शराब के विदाई उत्सव में सभी गांववासी सम्मिलित हुए और सभी लोगों ने एक स्वर में 'शराब मुर्दाबाद' के नारे लगाये। साथ ही लोगों ने संकल्प लिया कि पोलियो की तरह गांव से शराब का समूल नाश करके ही दम लेंगे।

इस अवसर पर गांव के मुकुल वर्मा (मौसम वैज्ञानिक), अमित वर्मा (शिक्षक), अभिषेक वर्मा, सिंटू वर्मा, रोहित शर्मा, दीपू धुरिया, दिलीप प्रजापति, आशाराम वर्मा (सेवानिवृत्त शिक्षक), रामकुमार वर्मा, नीबूलाल चौहान, भगवती चौहान, जयप्रकाश पटेल, पवन वर्मा, सत्यनारायण वर्मा, रवि पटेल, रामचेत वर्मा, लुदुर प्रजापति (लेखपाल), सुरेश चौहान, अशोक चौहान, आनंद वर्मा, अरविन्द वर्मा, लहुरी, संतराम मिस्त्री, वीरेन्द्र चौहान, कन्हैया विश्वकर्मा, ऋषि विश्वकर्मा, विन्देश्वरी, मुखराम वर्मा (एडवोकेट), सूरज मिश्रा, योगेश चतुर्वेदी आदि उपस्थित रहे। ❑

प्रकाशन के एकाउंटेंट सुरेन्द्र नारायण सिंह को पत्नी शोक

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी के सुरेन्द्र नारायण सिंह की धर्मपत्नी आशा देवी का गत 15 नवंबर 2020 को असामयिक निधन हो गया। वे एक दिन पहले अपने आपको पूर्ण स्वस्थ महसूस कर रही थीं और गृहकार्य में संलग्न थीं। उनकी उम्र 55 वर्ष थी। अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गयी हैं। पत्नी के अचानक निधन से सुरेन्द्र भाई सहित पूरा परिवार शोकाकुल है। असहनीय दुख की इस घड़ी में प्रकाशन कार्यालय के सामने स्थित गांधी चबूतरे पर प्रकाशन के सभी कार्यकर्ताओं ने श्रद्धांजलि सभा आयोजित कर भवानी शंकर कुसुम, शशि बहन त्यागी एवं आशा देवी को सामूहिक श्रद्धांजलि दी गयी।

गतिविधियां एवं समाचार

वाराणसी में संविधान दिवस मनाया गया : राष्ट्रीय संविधान दिवस के अवसर पर वर्तमान भारतीय परिवेश में संविधान के संरक्षण के उद्देश्य से वाराणसी के विभिन्न सामाजिक संगठनों ने 26 नवम्बर को वरुणापुल स्थित शास्त्री घाट पर समारोह का आयोजन किया और 'हमारा संविधान – हमारी विरासत' विषय पर संगोष्ठी आयोजित की।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में ऑल इंडिया सेकुलर फोरम के संयोजक डॉ. मोहम्मद आरिफ ने कहा कि संविधान हमारे देश का आधुनिक मानव मूल्यों पर आधारित वह पहला लिखित दस्तावेज है, जो हमारे जीवन के सभी क्षेत्रों को विनियमित करता है। उन्होंने कहा कि इतिहास की गति को पीछे की ओर ले जाने वाली ताकतें आज संविधान की मूल आत्मा के साथ खिलवाड़ कर रही हैं और उसके स्थान पर प्रतिगामी मूल्यों को स्थापित करना चाहती हैं, जिसे इस देश के इंसाफपसंद नागरिक कभी भी बर्दाश्त नहीं करेंगे। उन्होंने कहा कि आज कमजोर-वंचित तबकों और स्त्रियों के साथ-साथ अल्पसंख्यक समुदाय भी निशाने पर हैं, कभी लव-जिहाद के नाम पर तो कभी गोरक्षा के नाम पर मासूमों को निशाना बनाया जा रहा है। इसकी मूल वजह बताते हुए उन्होंने कहा कि रसातल में जाती अर्थव्यवस्था और संसाधनों की पूँजीपतियों द्वारा लूट से लोगों का ध्यान भटकाने के लिए इस तरह के प्रपंच रचे जा रहे हैं। सरकार जहाँ मजदूर अधिकारों को कुचलते हुए उनके खिलाफ तरह-तरह के कानून ला रही है वहीं खेती-किसानी को भी तबाह किया जा रहा है, जिससे कि कृषि क्षेत्र में बड़ी पूँजी के प्रवेश की राह को हमवार बनाया जा सके।

प्रेरणा कला मंच के कलाकारों के जागरण गीतों के द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत हुई। फादर आनंद ने स्वागत करते हुए कहा कि जब तक संविधान की उद्देशिका में उल्लिखित न्याय, स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व अमल में नहीं लाया जाएगा, लोकतंत्र सुरक्षित नहीं होगा डॉ. लुइस प्रकाश ने विषय प्रवेश कराते हुए आज के दौर में संविधान पर मंडरा रहे खतरों के प्रति अवगत कराया और कहा कि देश को पंथनिरपेक्ष, समाजवादी, प्रगतिशील और लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने के लिए लगातार जागरूक रहना होगा। संविधान के प्रावधानों को लागू नहीं करने से जो हानि वंचित वर्ग को होती है, उसके बारे में दलित समूह की प्रतिनिधि शुभावती देवी, मजदूर वर्ग से सुरेन्द्र सिंह, महिलाओं की प्रतिनिधि डॉक्टर मुनीज़ा रफ़ीक खान, अल्पसंख्यक वर्ग के प्रतिनिधि डॉ.मोहम्मद आरिफ एवं अब्दुल्लाह गफ्फार और किसानों के प्रतिनिधि रामजनम ने भी अपनी अपनी व्यथा सुनाई । इस के पश्चात, हिन्दू, सिख, मुस्लिम, क्रिश्चियन और बौद्ध धर्मों के प्रतिनिधि के रूप में कबीर मूलगादी मठ कबीर चौरा के भाई डॉक्टर भागीरथ दास, हरहुआ ध्यानाश्रम के आचार्य फादर बेनेडिक्ट, हाजी सैयद फरमान हैदर करबलाई, एडवोकेट सरदार गुरिंदर सिंह, डॉ नीति भाई आदि ने भारत के पवित्र संविधान के अनुसार व्यक्तिगत, सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक जीवन बिताने की आवश्यकता पर बल दिया ।नीति भाई ने संविधान की सुरक्षा के लिए 'करो या मरो' का आह्वान किया।

सभा की समाप्ति पर सभी लोग कोविड 19 के नियमों का पालन करते हुए, देशरत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा के पास गए और अपने हाथ में जलती हुई मोमबत्ती के साथ संविधान की प्रस्तावना को दुहराते हुए उसके संरक्षण का संकल्प लिया। असदुल्लाह आज़मी ने सबको बधाई दी और डॉ. धनञ्जय त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। सच्चिदानंद ब्रह्मचारी के नेतृत्व में लोगों ने देश भक्ति और संविधान के सम्मान में नारे लगाए और इस तरह समारोह का समापन हुआ।

इस कार्यक्रम का आयोजन साझा संस्कृति मंच, आल इण्डिया सेक्युलर फोरम, अदब सराय, सी.आर. आई., फोरम फॉर जस्टिस एंड पीस, इंडियन क्रिश्चियंस फॉर डेमोक्रेसी, लोक चेतना समिति चिरईगाँव, विश्व ज्योति जनसंचार समिति आदि संगठनों ने मिलकर किया। इस अवसर पर फादर सी. एम. थॉमस, एडवोकेट सुरेन्द्र चरण, डॉक्टर जयंत रसल राज, प्रमोद पटेल, प्रवीण जोशी, फादर प्रेम एंथोनी, मुकेश झंझरवाला, अबू हाशिम, डॉक्टर एम. अकबर, हमारा मोर्चा के संपादक कामता प्रसाद, एडवोकेट प्रेम प्रकाश सिंह यादव सिस्टर आशली, अर्पिता, कौशल्या, डॉ. नूर फातमा, सुधीर कुमार जायसवाल आदि उपस्थित थे। **-डॉ. मोहम्मद आरिफ़**

किसान विरोधी नीति के खिलाफ प्रदर्शन : केन्द्र तथा राज्य सरकार की किसान विरोधी नीतियों के खिलाफ अखिल भारतीय किसान संघर्ष समन्वय समिति सीतामढ़ी (बिहार) के तत्वावधान मे घटक संगठन संयुक्त किसान संघर्ष मोर्चा, अभाकिसभा, किसान सभा तथा जय किसान आन्दोलन के साथी तथा बड़ी संख्या में किसानों ने गांधी मैदान सीतामढ़ी से जूलूस निकाला। सीतामढ़ी शहर मे प्रदर्शन के साथ केंद्र सरकार से किसान विरोधी तीनों काला कानून रद्द करने, नये बिजली कानून वापस लेने, एम एस पी को कानूनी दर्जा देने तथा बिहार सरकार से धान की सरकारी खरीद एफसीआई के माध्यम से शुरु कराने,गन्ना का दाम 6सौ रुपये क्विंटल तय करने तथा गन्ना मूल्य का बकाया भुगतान कराने, मार्च से सितंबर के बीच भारी वर्षा, आंधी, ओला, बाढ़ तथा कीट के प्रकोप से फसलो की बर्बादी की भरपाई, इनपुट तथा फसल बीमा के भुगतान की मांग को लेकर पूरे शहर में सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की गई और मेहसौल चौक पर गन्ना तथा धान का फसल जलाकर विरोध प्रदर्शन व सड़क जाम किया गया। मेहसौल चौक पर किसानों को संबोधित करते हुए नेताओं ने कहा कि एक पखवाड़े में सरकार मांगों पर अमल नहीं करती तो बडे आन्दोलन का ऐलान करेंगे। सभा को डॉ. आनन्द किशोर, जलंधर यदुबंशी, जीवनाथ शाफी, ब्रजमोहन मंडल, हरिओम शरण नारायण, विनोद बिहारी मंडल, चन्द्रजीत यादव, संजीव कुमार सिंह, अभा किसान सभा के जयप्रकाश राय, केदार शर्मा, किसान सभा के प्रो. दिगम्बर ठाकुर, विश्वनाथ बुन्देला, जय किसान आन्दोलन के मुकेश कुमार मिश्र, आफताब अंजुम, मोर्चा नेता लालबाबू मिश्रा, शशिधर शर्मा, चन्द्रदेव मंडल, पारसनाथ सिंह, उमेश कुमार सिंह, रामनरेश यादव, बीरेंद्र यादव, राकेश कुमार सिंह, किसान सभा के अध्यक्ष बैजनाथ हाथी, का. मदन राय, रामपदार्थ मिश्रा, रामबाबू सिंह, मो. गयासुद्दीन, सुरेश बैठा, राजेश कुमार सिंह, हरिनारायण सिंह, नंदकिशोर मंडल सहित अन्य नेताओं ने संबोधित किया तथा जूलूस का नेतृत्व किया। **-आनन्द किशोर**

'Sarvodaya Jagat' Hindi Fortnightly
Registered under RNI No. 35495/78, Postal Registration No. VSI-(E) 04, Valid upto 31 December 2020
Issued by S.S.P.O. Varanasi (East Division)

केशव शरण की पांच कविताएं

1. आत्मनिर्भरता

अवन्ती, काशी, कोशल,
कोसाम्बी, कपिलवस्तु, उज्जयिनी,
मगध, हस्तिनापुर
कहीं भी ग्राम-स्वराज नहीं
उसके सपनों का,
जिसने इन सबको स्वतंत्र करा लिया
जनता के साथ मिलकर
दासता की बेड़ियों से।
वह मारा जा चुका है
और इनमें से एक भी
आज तक आत्मनिर्भर नहीं हो सका है।

इनका महासंघ
इनके लिए
दूरस्थ राष्ट्रों से
ऋण लेता है
और इनको पैकेज देता है विकासमुखी।

क्या कारण कि
फिर भी नहीं सुखी?
अवन्ती
काशी
कोशल
कोसाम्बी
कपिलवस्तु
मगध
हस्तिनापुर
सब के सब दुखी?

2. सन्नाटा

शहर की गलियों में
सननटा छाया हुआ है
गांवों में, कस्बों में सननटा छाया हुआ है
सननटा छाया हुआ है
बाज़ारों में,
सभागारों में।
बताया जा रहा है,
संसद में हंगामा हुआ है
बताया जा रहा है,
हंगामा आखिरी है।

3. तबाह

मैंने अपने को
चोर बना लिया
और अपनी चोरियां
बचाने में लगा हूं।

मैंने अपने को
चापलूस बना लिया
और अपनी चापलूसियां
बचाने में लगा हूं।

मैंने अपने को झूठा बनाया, क्योंकि
हमेशा अपने झूठों को बचाने में लगा हूं।

मैंने क्यों बनाया
अपने को कायर और क्रूर?
मैंने क्यों बनाया
अपने को मतलबी, मक्कार और मजबूर?

आदमी था मैं,
क्यों लगा मुझे,
मैं आदमीयत बचाने में
तबाह हो जाऊंगा?

मैं तबाह नहीं तो
और क्या हूं?

4. ऐसा इंसान

जो किसी से न डरे
और न डराये किसी को,
ऐसा इंसान चाहिए
सामाजिक ऊंचाइयों पर।
शीर्ष पर तो
परम आवश्यक है यह
कि वह हो
ऐसा इंसान,
जो मोहनदास करमचंद गांधी का नहीं,
अपना हिंद स्वराज लाये।

सैन्य और न्याय-बल
नीरस और नाकामयाब लगता है।
अपनी ही डरी हुई जनता को देखकर
बहुत ख़राब लगता है।

5. हिंदी में काम

आपने 'वाटर' मांगा
मैंने पानी दिया।
मैं जानता हूं,
जब कोई वाटर मांगता है तो
उसे पानी ही दिया जाता है।

आपने 'थैंक यू' कहा,
मैंने कहा,
स्वागत है।

आपने 'रेस्ट' करने को कहा,
मैंने सजा दिया बिस्तर,
आप करें आराम!

जितना मैं जानता हूं,
उतना मैं करता हूं
हिंदी में काम।

हिंदी में काम को
मैं छोटा नहीं समझता हूं।
जो मेरे महान देश की
महान भाषा है।
और मुझे आशा है
कि मेरे काम से
आपको कोई शिकायत नहीं होगी। ❑

सर्व सेवा संघ (स्वत्वाधिकारी) के लिए प्रकाशक अरविन्द अंजुम द्वारा सर्व सेवा संघ परिसर, राजघाट, वाराणसी (उ.प्र.) 221001 से प्रकाशित तथा महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी से मुद्रित। संपादक : बिमल कुमार